Fortnightly per copy Rs. 4/-

ओ३म्

3rd December 2021

आर्य जीवन

ఆర్య జీవన్

संस्कृति संरक्षण व सामाजिक परिवर्तन का संकल्प

హిందీ-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక

Website : http://www.aryasabhaapts.org

Narendra Bhavan Telephone : 040 24760030

Date of Publication 2nd and 17th of every Month, Date of Posting 3rd and 18th of every Month

१९ दिसम्बर १९२७ को जिन्हें फांसी दी गई

काकोरी कांड के प्रसिद्ध क्रांतिकारी

शहीद रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्लाखाँ, राजेन्द्र सिंह लाहिडी व ठाकुर रोशन सिंह

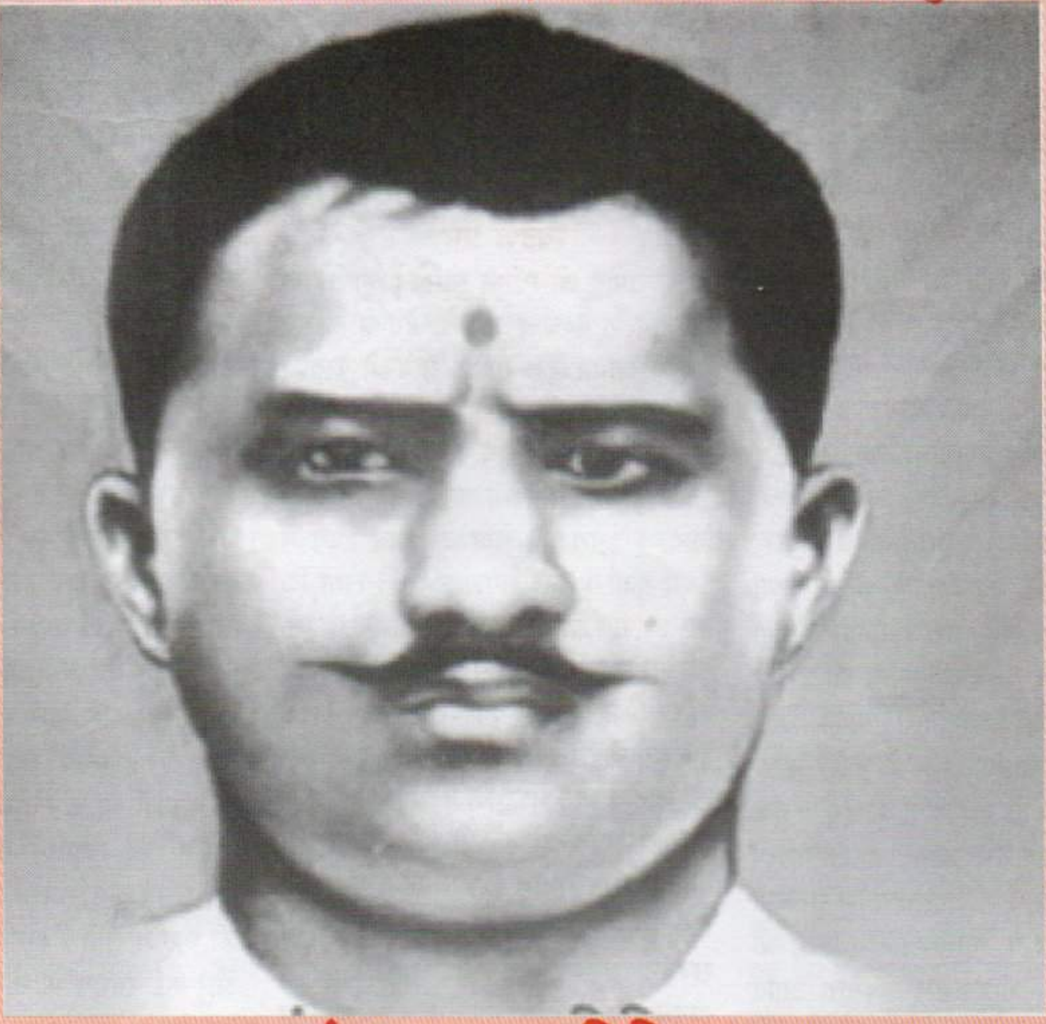

पं. रामप्रसाद बिस्मिल

अशफाक उल्लाखाँ

राजेन्द्र सिंह लाहिडी

ठाकुर रोशन सिंह

काकोरी काण्ड और उसके शहीद

-पं. रामप्रसाद बिस्मिल

'काकोरी काण्ड' भी आजादी के इतिहास की प्रमुखतम घटनाओं में से एक है । १२ फरवरी १९२२ को कांग्रेस की कार्यसमिति में महात्मा गाँधी द्वारा आजादी का आन्दोलन रोक दिए जाने पर क्रान्तिकारियों में आक्रोश पनप गया और उनकी ओर से पुनः जोर से क्रान्तिकारी-गतिविधियां 'काकोरी' लखनऊ के पास एक स्टेशन है । सशस्त्र क्रान्तिकारियों ने क्रान्ति सम्बन्धी कार्यों के लिए ९ अगस्त १९२५ को इस स्टेशन पर कांप गयी । व्यापक स्तर पर इसकी खोजबीन हुई । इस सम्बन्ध में २६ दिसम्बर १९२५ को ४०० के लगभग लोगों का गिरफ्तार किया गया जिनमें ६ अप्रैल १९२७ को दल के नेता रामप्रसाद बिस्मिल तथा अशफाक उल्ला खां, रोशनसिंह और राजेन्द्र लाहिड़ी को फांसी की सजा हुई तथा शचीन्द्रनाथ सान्याल को आजीवन कालापानी की सजा । मन्मथनाथ गुप्त को १४, वर्ष, सर्वश्री योगेशचन्द्र चटर्जी, गोविन्द चरणकर, राजकुमार सिन्हा, मुकुन्दीलाल, श्रीराम कृष्ण खन्ना को ५-५ वर्ष, प्रणवेशकुमार चटर्जी को ४ वर्ष और रामनाथ पाण्डेय को ३ वर्ष की सजा हुई । शचीन्द्रनाथ बख्शी, और चन्द्रशेखर आज़ाद पकड़ में ही नहीं आए । इस काण्ड में सजा २० लोगों को हुई जबकि क्रान्ति में केवल दस व्यक्ति ही सम्मिलित थे । इस मुकदमें में पं. जगतनारायण सरकारी वकील था और पं. गोविन्दवल्लभ पन्त, श्री चन्द्रभानु गुप्त, मोहनलाल सक्सेना आदि अभियुक्तों के वकील थे । (सम्पादक)

पं. रामप्रसाद बिस्मिल
(आत्मकथा)

तोमरधार में चम्बल नदी के किनारे पर दो ग्राम आबाद हैं जो ग्वालियर राज्य में बहुत ही प्रसिद्ध हैं क्योंकि इन ग्रामों के निवासी बड़े ही उद्दण्ड हैं । वे राज्य की सत्ता की कोई चिन्ता नहीं करते ।..... ये दोनों ग्राम अंग्रेजी राज्य की सीमा से लगभग पन्द्रह मील की दूरी पर चम्बल नदी के तट पर हैं । यहीं के एक प्रसिद्ध वंश में मेरे पितामह श्री नारायणलाल जी का जन्म हुआ था । वह कौटुम्बिक कलह और अपनी भाभी के असहनीय दुर्व्यवहार के कारण मजबूर हो, अपनी जन्मभूमि को छोड़, इधर-उधर भटकते रहे । अन्त में अपनी धर्मपत्नी और दो पुत्रों के साथ वह शाहजहांपुर पहुंचे । उनके इन्हीं दो पुत्रों में ज्येष्ठ पुत्री श्री मुरलीधर जी मेरे पिता हैं ।

माताजी के अतिरिक्त जो कुछ जीवन तथा शिक्षा मैंने प्राप्त की वह पूज्यपाद श्री १०८ स्वामी सोमदेव जी की कृपा का परिणाम है ।

स्वदेश प्रेम

पूज्यपाद श्री स्वामी सोमदेव का देहान्त हो जाने के पश्चात् जब से अंग्रेजी के नवें दर्जे में आया, कुछ स्वदेश सम्बन्धी पुस्तकों का अवलोकन आरम्भ हआ । शाहजहांपुर में सेवा समिति की नींव पं. श्रीराम वाजपेयी जी ने डाली, उसमें भी बड़े उत्साह से कार्य किया । दूसरों की सेवा का भाव हृदय में उदय हुआ । कुछ समझ में आने लगा कि वास्तव में देशवासी बड़े दुःखी है । उसी वर्ष मेरे पड़ोसी तथा मित्र जिनसे मेरा स्नेह अधिक था, एण्ट्रेस की परीक्षा पास करके कॉलेज में शिक्षा पाने चले गए । कॉलेज की स्वतन्त्र वायु में उनके हृदय में भी स्वदेश के भाव उत्पन्न हुए । उसी साल लखनऊ में अखिल भारतवर्षीय कांग्रेस का उत्सव हुआ । मैं भी उसमें सम्मिलित हुआ । कतिपय सज्जनों से भेंट हुई । देश दशा का कुछ अनुमान हुआ और निश्चय हुआ कि देश के लिए कोई विशेष कार्य किया जाए । देश में जो कुछ हो रहा है, उसके उत्तरदायी सरकार ही है । भारतवासियों के दुःख-दुर्दशा की जिम्मेदारी गवर्नमेण्ट पर ही है, अतएव सरकार को पलटने का प्रयत्न करना चाहिए । मैंने भी इस प्रकार के विचारों में योग दिया । कांग्रेस में महात्मा तिलक के पधारने की खबर थी, इस कारण गरम दल के अधिक व्यक्ति आए हुए थे । कांग्रेस के सभापति का स्वागत बड़ी धूमधाम से हुआ था । उसके दूसरे दिन लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक की स्पेशल गाड़ी आने का समाचार मिला । लखनऊ स्टेशन पर बहुत बड़ा जमाव था । स्वागतकारिणी समिति के सदस्यों से मालूम हुआ कि लोकमान्य का स्वागत केवल स्टेशन पर ही किया जाएगा और शहर में सवारी न निकाली जाएगी । जिसका कारण यह था कि स्वागतकारिणी समिति के प्रधान पं. जगत्नारायण जी थे । अन्य गणमान्य सदस्यों में पं. गोकरणनाथ जी तथा अन्य उदार दल वालों (माडरेटों) की संख्या अधिक थी । माडरेटों को भय था कि यदि लोकमान्य की सवारी शहर में निकाली गई, तो कांग्रेस के प्रधान से भी अधिक सम्मान होगा, जिसे वे उचित न समझते थे । अतः उन सब ने निश्चय किया कि जैसे ही लोकमान्य पधारें, उन्हें मोटर में बिठाकर शहर के बाहर-बाहर निकाल ले जाएं । इन सब बातों को सुनकर नवयुवकों का विरोध करते हुए कहा कि लोकमान्य का स्वागत अवश्य होना चाहिए । मैंने भी इस विद्यार्थी के कथन में सहयोग दिया । इसी प्रकार कई नवयुवकों ने निश्चय किया कि जैसे ही लोकमान्य स्पेशल से उतरें, उन्हें घेरकर लोकमान्य सब से पहले उतरे । स्वागतकारिणी के सदस्यों ने कांग्रेस के तथा एम.ए. का विद्यार्थी मोटर के आगे लेट गए । सब कुछ समझाया गया, मगर किसी की एक न सुनी । हम लोगों की देखा-देखी और कई नवयुव भी मोटर के सामने आकर बैठ गए । उस समय मेरे उत्साह का यह हाल था कि मुंह से बात न निकलती थी, केवल रोता था और कहता था, मोटर मेरे ऊपर से निकाल ले जाओ । स्वागतकारिणी के सदस्यों से कांग्रेस के प्रधान को ले जाने वाली गाड़ी मांगी, उन्होंने देना स्वीकार न किया । एक नवयुवक ने मोटर का टायर काट दिया । लोकमान्य जी बहुत कुछ समझाते किन्तु वहां सुनता कौन ? एक किराए की गाड़ी से घोड़े खोलकर लोकमान्य के पैरों पर सिर रख, उन्हें उसमें बिठाया

और सबने मिल कर गाड़ी खीचनी शुरू की। इस प्रकार लोकमान्य का इस धूमधाम से स्वागत हुआ कि किसी नेता की उतने जोरों से सवारी न निकाली गई। लोगों के उत्साह का यह हाल था कि कहते थे कि एक बार गाड़ी में हाथ लगा लेने दो, जीवन सफल हो जाए। लोकमान्य पर फूलों की जो वर्षा की जाती थी, उस में से जो फूल नीचे गिर जाते थे, उन्हें उठाकर लोग पल्ले में बांध लेते थे। जिस स्थान पर पं. लोकमान्य के पैर पड़ते, वहां की धूल सब के मत्थों पर दिखाई देती। कुछ धूल को भी अपने रूमाल में बांध लेते थे। इस स्वागत से माडरेटों की वड़ी भद्द हुई।

क्रान्तिकारी आन्दोलन

कांग्रेस के अवसर पर लखनऊ में ही मालूम हुआ कि एक गुप्त समिति है जिसका मुख्य उद्देश्य क्रान्तिकारी आन्दोलन में भाग लेना है। यहीं से क्रान्तिकारी गुप्त समिति की चर्चा सुनकर कुछ समय बाद मैं भी क्रान्तिकारी समिति के कार्य में योग देने लगा। अपने एक मित्र द्वारा क्रान्तिकारी समिति का सदस्य हो गया। थोड़े ही दिन में मैं कार्यकारिणी का सदस्य बना लिया गया। समिति में धन की बहुत कमी थी, उधर हतियारों की भी जरूरत थी। जब घर वापस आया, त विचार हुआ कि एक पुस्तक प्रकाशित की जाए और उसमें जो लाभ हो, उससे हथियार खरीदे जाएं। पुस्तक प्रकाशित कराने के लिए धन कहां से आए? विचार करते करते मुझे एक चाल सूझी। मैंने अपनी माता जी से कहा कि मैं कुछ रोजगार करना चाहता हूं, उसमें अच्छा लाभ होगा। यदि रुपए दे सकें तो बड़ा अच्छा हो। उन्होंने २०० रुपए दिए। **'अमेरिका को स्वाधीनता कैसे मिली'** नामक पुस्तक लिखी जा चुकी थी, प्रकाशित होने का प्रवन्ध हो गया। थोड़े रुपये की जरुरत और पड़ी, मैंने माता जी से २०० रुपये और लिए। पुस्तक की विक्री हो जाने पर माता जी के रुपए पहले चुका दिए। लगभग २०० रुपए और भी बचे। पुस्तकें अभी विकने के लिए बहुत बाकी थी। उसी समय देशवासियों के नाम **'सन्देश'** नामक एक पर्चा छपवाया गया, क्योंकि पं. गेंदालाल जी, ब्रह्मचारी जी के दल सहित ग्वालियर में गिरफ्तार हो गए थे। अब सब विद्यार्थियों ने अधिक उत्साहर के साथ काम करने की प्रतिज्ञा की। पर्चे कई जिलों में लगाए गए और बांटे गए। 'पर्चे' तथा 'अमेरिका को स्वाधीनता कैसे मिली' पुस्तक दोनों संयुक्त प्रान्त की सरकार ने जब्त कर लिए।

हथियारों की ख़रीद

हम ने तीन राइफलें, एक बारह बोर की दो नाली कारतूसी बन्दूक, दो टोपीदार बन्दूकें, तीन टोपीदार रिवाल्वर और पांच कारतूसी रिवाल्वर खरीदे। प्रत्येक हथियार के साथ पचास या सौ कारतूस भी ले लिए। इन सब में लगभग चार हजार रुपए व्यय हुए। कुछ कटार तथा तलवारें इत्यादि भी खरीदी थीं।

मैनपुरी षड्यन्त्र

इधर तो हम लोग अपने कार्य में व्यस्त थे, उधर मैनपुरी के एक सदस्य पर लीडरी का भूत सवार हुआ। उन्होंने अपना पृथक् संगठन किया। कुछ अस्त्र-शस्त्र भी एकत्रित किए। धन की कमी की पूर्ति के लिए एक सदस्य से कहा कि अपने किसी कुटुम्बी के यहाँ डाका डलवाओं। उस सदस्य ने कोई उत्तर न दिया। उसे आज्ञा पत्र दिया गया और मार देने की धमकी दी गई। वह पुलिस के पास गया। मामला खुला। मैनपुरी में घर पकड़ शुरू हो गई। हम लोगों को भी समाचार मिला। दिल्ली में कांग्रेस होन वाली थी। विचार किया गया कि 'अमेरिका को स्वाधीनता कैसे मिली' नामक पुस्तक जो यू.पी. सरकार ने जब्त कर ली थी, कांग्रेस के अवसर पर बेच दी जाए। कांग्रेस के उत्सव पर में शाहजहांपुर की सेवा समिति के साथ अपनी एम्बूलेन्स की टोली लेकर गया था। कांग्रेस पण्डाल के बाहर खुले रूप में नवयुवक यह कहकर पुस्तक बेच रहे थे यू.पी. में जब्त किताब **'अमेरिका को स्वाधीनता कैसे मिली'**। खुफिया पुलिस वालों ने कांग्रेस का कैम्प घेर लिया। सामने ही आर्य समाज का कैम्प था। वहां पर पुस्तक विक्रेताओं की पुलिस ने तलाशी लेना आरम्भ कर दिया। मैंने कांग्रेस कैम्प पर अपने स्वयंसेवक इसलिए छोड़ दिए कि वे विना स्वागतकारिणी समिति के मन्त्री या प्रधान की आज्ञा पाए, किसी पुलिस वाले को कैम्प में न घुसने दें। आर्य समाज के कैम्प में गया। सब पुस्तकें एक टेण्ट में जमा थी। मैंने अपने ओवर कोट में सब पुस्तकें लपेटीं, जो लगभग दो सौ होंगी और उसे कन्धे पर डालकर पुलिस वालों के सामने से निकला। मैं वर्दी पहने था, टोप लगाए हुए था। एम्बुलेन्स का बड़ा सा लाल बिल्ला मेरे हाथ पर लगा हुआ था, किसी ने सन्देह भी न किया और पुस्तकें बच गई।

दिल्ली कांग्रेस से लौट कर शाहजहांपुर आए। वहां भी पकड़-धकड़ शुरू हुई। हम लोग वहां से चलकर दूसरे शहर के एक मकान में ठहरे हुए थे। रात्रि के समय मकान मालिक ने बाहर से मकान में ताला डाल दिया। ग्यारह बजे के लगभग हमारा एक साथी बाहर से आया। उसने बाहर से ताला पड़ा देख पुकारा। हम लोगों को भी सन्देह हुआ। सब के सब दीवार पर से उतर कर मकान छोड़कर चल दिए। अन्धेरी रात थी। थोड़ी दूर गए थे कि हठात् आवाज आई 'खड़े हो जाओ। कौन जाता है?' हम लोग सात आठ आदमी थे। समझे कि घिर गए। कदम उठाना ही चाहते थे कि फिर आवाज आई, खड़े हो जाओ, नहीं तो गोली मारते हैं। हम लोग खड़े हो गए। थोड़ी देर में एक पुलिस के दरोगा बन्दूक हमारी तरफ किए हुए रिवाल्वर कन्धे में लटकाए, कई सिपाहियों को लिए हुए आ पहुंचे। 'पूछा कौन हो?' 'कहां आते हो?' 'हम लोगों ने कहा विद्यार्थी हैं स्टेश जा रहे हैं', कहां जाओगे? लखनऊ। उस समय रात के दो बजे थे। लखनऊ की गाड़ी पांच बजे जाती थी। दारोगा जी को शक हुआ। लालटेन आई। हम लोगों के चेहरे रोशनी में देखकर उनका शक जाता रहा। कहने लगे-'रात के समय लालटेन लेकर चला कीजिए। गलती हुई माफ कीजिए।' हम लोग भी सलाम झाड़कर चलते बने। एक बाग में फूंस की मढ़ैया पड़ी थी उसमें जा बैठे। पानी बरसने

लगा। मूसलाधार पानी गिरा। सब कपड़े भीग गए। जमीन पर भी पानी भर गया। जनवरी का महीना था। खूब जाड़ा पड़ रहा था। रातभर भीगते और ठिठुरते रहे। बड़ा कष्ट हुआ। प्रातःकाल धर्मशाला में जाकर कपड़े सुखाए। दूसरे दिन शाहजहांपुर आकर बन्दूकें जमीन में गाड़कर प्रयाग पहुंचे।

विश्वासघात

प्रयाग की एक धर्मशाला में दो-तीन दिन निवास करके विचार किया गया कि एक व्यक्ति बहुत दुर्वल आत्मा है, यदि वह पकड़ा गया, तो सब भेद खुल जाएगा, अतः उसे मार दिया जाए। मैंने कहा मनुष्य हत्या ठीक नहीं। पर अन्त में निश्चय हुआ कि कल चला जाए और इसकी हत्या कर दी जाए। मैं चुप हो गया। हम लोग चार सदस्य साथ थे। हम चारों तीसरे पहल झूंसी का किला देखने गए। जब लौटे तब सन्ध्या समय उपासना करने के लिए रेती पर वैठ गया। एक महाशय ने कहा यमुना के निकट बैठो। मैं तट से दूर एक ऊंचे स्थान पर बैठा था। मैं वहीं बैठा रहा। वे तीनो भी मेरे पास ही आकर बैठ गए। मैं आखें बन्द किए ध्यान कर रहा था। थोड़ी देर में खट से आवाज हुई। समझा कि साथियों में कोई कुछ कर रहा होगा। तुरन्त ही एक फायर हुआ। गोली सन से मेरे कान के पास से निकल गई। मैं समझ गया कि मेरे ऊपर ही फायर हुआ है। मैं रिवाल्वर निकालता हुआ आगे बढा। पीछे मुड़कर देखा वह महाशय माउजर हाथमें लिए मेरे ऊपर गोली चला रहे हैं। कुछ दिन पहले मुझसे उनका कुछ झगड़ा हो चुका था, किन्तु वाद में समझौता हो गया था। फिर भी उन्होंने यह कार्य किया। मैं भी सामना करने को प्रस्तुत हुआ। तीसरा फायर करके वह भाग खड़े हुए। उनके साथ प्रयाग में ठहरे हुए दो सदस्य और भी थे। वे तीनों भाग गए। मुझे देर इसलिए हुई कि मेरा रिवाल्वर चमड़े के खोल में रखा था। यदि आधा मिनट और उनमें से कोई भी खड़ा रह जाता तो मेरी गोली का निशाना वन जाता। जब सब भाग गए, तव मैं गोली चलाना व्यर्थ जान, वहां से चला आया। मैं बाल-बाल बच गया। मुझ से दो गज के फासले पर से माउजर पिस्तौल से गोलियां चलाई गई ौर उस अवस्था में जबकि मैं बैठा हुआ था। मेरी समझ में नहीं आया कि मैं बच कैसे गया। पहला कारतूस फूटा नहीं। तीन फायर हुए। मैं गद्‌गद होकर पमात्मा का स्मरण करने लगा।...

मैं हर वक्त यही विचार किया करता कि मुझे बदला अवश्य लेना चाहिए। एक दिन प्रतिज्ञा करके रिवाल्वर लेकर शत्रु की हत्या करने की इच्छा से मैं गया भी, किन्तु सफलता न मिली। इसी प्रकार की उधेड़बुन में मुझे ज्वर आने लगा। कई महीनों तक बीमार रहा। माता जी मेरे विचारों को समझ गई। माता जी ने बड़ी सान्त्वना दी। कहने लगी कि-'प्रतिज्ञा करो कि तुम अपनी हत्या की चेष्टा करने वालों को जान से न मारोगे।' मैंने प्रतिज्ञा करने में आनाकानी की तो वह कहने लगी कि-'मैं मातृऋण के बदले में प्रतिज्ञा कराती हूं, क्या जवाब है?' मैंने कहा-'मैं उनसे बदला लेने की प्रतिज्ञा कर चुका हूं।' माता जी ने मुझे बाध्य कर मेरी प्रतिज्ञा भंग कराई। अपनी बात पक्की रखी। मुझे ही सिर नीचा करना पड़ा। उस दिन से मेरा ज्वर कम होने लगा और मैं अच्छा हो गया।

पलायनावस्था

मैं ग्राम में ग्रामवासियों की भांति उसी प्रकार के कपड़े पहनकर रहने लगा। खेती भी करने लगा। देखने वाले अधिक से अधिक इतना समझते थे कि मैं शहर में रहा हूं, सम्भव है कुछ पढ़ा भी हूं। खेती के कामों में मैंने विशेष ध्यान दिया। शरीर तो हृष्ट-पुष्ट था ही, थोड़े ही दिनों में अच्छा खासा किसान बन गया। उस कठोर भूमि में खेती करना कोई सरल काम नहीं। बबूल नीम के अतिरिक्त कोई एक दो आम के वृक्ष कहीं भले ही दिखाई दे जाएं। बाकी वह नितान्त मरुभूमि है। खेत में जाता था। थोड़ी देर में ही झरबेरी के कांटों से पैर भर जाते। पहले पहल तो बड़ा कष्ट प्रतीत हुआ। कुछ समय पश्चात् अभ्यास हो गया। जितना खेत उस देश का एक बलिष्ठ पुरुष दिन भर में जोत सकता था, उतना मैं भी जोत लेता था। मेरा चेहरा विल्कुल काला पड़ गया। थोड़े दिनों के लिए मैं शाहजहाँपुर की ओर घूमने आया, तो कुछ लोग मुझे पहचान भी न सके। मैं रात को शाहजहाँपुर पहुंचा। गाड़ी छूट गई। दिन के समय पैदल जा रहा था कि एक पुलिस वाले ने पहचान लिया। वह और पुलिस वालों को लेने के लिए गया। मैं भागा। पहले दिन का ही थका हुआ था। लगभग बीस मील पहले दिन पैदल चला था। उस दिन भी पैतीस मील पैदल चलना पड़ा।..... जव राजकीय घोषणा हुई और राजनैतिक कैदी छोड़े गए, तब शहाजहाँपुर आकर कोई व्यवसाय करने का विचार हुआ ताकि माता-पिता की कुछ सेवा हो सके। विचार किया करता था कि इस जीवन में अब फिर कभी आजादी से शाहजहाँपुर में विचरण न कर सकूंगा। परमात्मा की लीला अपार है। वे दिन आए, मैं पुनः शाहजहाँपुर का निवासी हुआ।...

स्वतन्त्र जीवन

राजकीय घोषणा के पश्चात् जब मैं शाहजहाँपुर आया, तो शहर की अद्‌भुत दशा देखी। कोई पास तक खड़े होने का साहस न करता था। जिसके पास मैं जाकर खड़ा हो जाता था, वह नमस्ते करके चल देता था। पुलिस का बड़ा प्रकोप था। प्रत्येक समय यह छाया की भांति पीछे-पीछे फिरा करती थी। इस प्रकार का जीवन कब तक व्यतीत किया जाए? मैंने कपड़ा बुनने का काम सीखना आरम्भ किया। जुलाहे बड़ा कष्ट देते थे। कोई काम सिखाना नहीं चाहता था। बड़ी कठिनता से मैंने कुछ काम सीखा।.....

अशान्त युवक दल

कुछ महानुभावों की प्रकृति होती है कि अपनी कुछ शान जमाना या अपने आपको बड़ा दिखाना अपना कर्त्तव्य समझते हैं। जिससे भयंकर हानियां हो जाती हैं। भोले-भाले आदमी ऐसे मनुष्यों में विश्वास करके उनमें आशातीत साहस, योग्यता तथा कार्य दक्षता की आशा करके उनमें आशातीत साहस, योग्यता तथा कार्य दक्षता की आशा

करके उन पर श्रद्धा रखते हैं। किन्तु समय आने पर यह निराशा के रूप में परिणत हो जाती है।..... इस प्रकार के मनुष्य प्रत्येक समाज तथा प्रत्येक जाति में पाए जाते हैं। इनसे क्रान्तिकारी दल भी मुक्त नहीं रह सकता। नवयुवकों का स्वभाव चंचल होता है, वे शान्त रहकर संगठित कार्य करना बड़ा दुष्कर समझते हैं। उनके हृदय में उत्साह की उमंगें उठती हैं। वे समझते हैं, दो चार अस्त्र हाथ आए कि हमने गवर्नमेण्ट को नाकों चने चबवा दिए। मैं भी जब क्रान्तिकारी दल में योग देने का विचार कर रहा था, उस समय मेरी उत्कण्ठा थी कि यदि एक रिवाल्वर मिल जाए, तो दस बीस अंग्रेजों को मार दूं। इसी प्रकार के भाव मैंने कई नवयुवकों में देखे।.... रुपए का प्रबन्ध करना नितान्त आवश्यक था। किन्तु वह हो कैसे ? दान कोई देता न था, कर्ज भी न मिलता था और कोई उपाय न देख, डाका तय हुआ। किन्तु किसी व्यक्ति विशेष की सम्पत्ति Private property पर डाका डालना हमें अभीष्ट न था। सोचा, यदि लूटना है तो सरकारी माल क्यों न लूटा जाए ? इसी उधेड़बुन में एक दिन मैं रेल में जा रहा था। गार्ड के डिब्बे के पास की गाड़ी में बैठा था। स्टेशन मास्टर एक थैली लाया और गार्ड के डिब्बे में डाल गया। कुछ खटपट की आवाज हुई। मैंने उतरकर देखा कि एक लोहे का सन्दूक है। विचार किया कि इसी में थैली डाली होगी। अगले स्टेशन पर उसमें थैली डालते भी देखा। अनुमान किया कि लोहे का सन्दूक गार्ड के डिब्बे में जंजीर उतार लेते होंगे। इसके थोड़े दिनों बाद लखनऊ स्टेशन पर जाने का अवसर प्राप्त हुआ। देखा एक गाड़ी में से कुली आमदनी वाले सन्दूक उतार रहे हैं। निरीक्षण करने से मालूम हुआ कि उनमें जंजीर ताला कुछ नहीं पड़ता, यों ही रखे जाते हैं। उसी समय निश्चय किया कि इसी पर हाथ मारूंगा।

रेलवे डकैती

उसी समय से धुन सवार हुई। तुरन्त स्थान पर जा टाइम-टेबल देख कर अनुमान किया कि सहारनपुर से गाड़ी चलती है, लखनऊ तक अवश्य दस हजार रुपए रोज की आमदनी होती होगी। सब बातें ठीक करके कार्यकर्ताओं को संग्रह किया। दस नवयुवकों को लेकर विचार किया कि किसी छोटे स्टेशन पर जब गाड़ी खड़ी हो, स्टेशन के तार घर पर अधिकार कर लें और गाड़ी का सन्दूक उतार कर तोड़ डालें, जो कुछ मिले, उसे लेकर चल दें। परन्तु इस कार्य में मनुष्यों की अधिक संख्या की आवश्यकता थी। इस कारण यह निश्चय किया कि गाड़ीकी जंजीर खींचकर चलती गाड़ी को खड़ा करके, तब लूटा जाए। सम्भव है कि तीसरे दर्जे की जंजीर खीचने से गाड़ी न खड़ी हो, क्योंकि तीसरे दर्जे में बहुधा प्रबन्ध ठीक नहीं रहता है। इस कारण से दूसरे दर्जे का जंजीर खींचने का प्रबंन्ध किया। सब उसी ट्रेन में सवार थे। गाड़ी खड़ी होने पर सब उतरकर गार्ड के डिब्बे के पास पहुंच गए। लोहे का सन्दूक उतारकर छैनियों से काटना चाहा छैनियों ने काम न दिया तब कुल्हाड़ा चला।

मुसाफिरों से कह दिया कि सब गाड़ी में चढ़ जाओ। गाड़ी का गार्ड गाड़ी में चढना चाहता था, पर उसे जमीन पर लेट जाने की आज्ञा दी ताकि बिना गार्ड की गाड़ी न जा सके। दो आदमियों को नियुक्त किया कि वे लाइन की पगडण्डी को छोड़कर घास पर खड़े होकर गाड़ी से हटे हुए गोली चलाते रहें। एक सज्जन गार्ड के डिब्बे से उतरे। उनके पास भी माउजर पिस्तौल था। विचारा कि ऐसा शुभ अवसर जाने कब हाथ आए। माउजर पिस्तौल काहे को चलाने को मिलेगा ? उमंग जो आई, सीधा करके दागने लगे। मैंने जो देखा तो डांटा, क्योंकि गोली चलाने की उनकी ड्यूटी (काम) ही न थी। फिर यदि कोई मुसाफिर कौतूहल वश बाहर को सिर निकाले तो उसके गोली जरूर लग जाए। हुआ भी ऐसा ही, जो व्यक्ति रेल से उतरकर अपनी स्त्री के पास जा रहा था, मेरा ख्याल है कि इन्हीं महाशय की गोली उसके लग गई। क्योंकि जिस समय यह महाशय सन्दूक नीचे डालकर गार्ड के डिब्बे से उतरे थे, केवल दो तीन फायर हुए थे। उसी समय स्त्री ने कोलाहल किया होगा और उसका पति उसके पास जा रहा था, जो उक्त महाशय की उमंग का शिकार हो गया। मैंने यथाशक्ति पूर्ण प्रबन्ध किया था कि जब तक कोई बन्दूक लेकर सामना करने न आए या मुकाबले में गोली न चले, तब तक किसी आदमी पर फायर न होने पाए। मैं नर हत्या करा के डकैती को भीषण रूप देना नहीं चाहता था। फिर भी मेरा कहा न मानकर अपना काम छोड़, गोली चला देने का यह परिणाम हुआ। गोली चलाने की ड्यूटी जिनको मैंने दी थी, वे बड़े दक्ष तथा अनुभवी मनुष्य थे, उनसे भूल होना असम्भव है। उन लोगों को मैंने देखा कि वे अपने स्थान से पांच मिनट बाद फायर करते थे। यही मेरा आदेश था।

सन्दूक तोड़ तीन गठरियों में थैलियां बांधी। सब से कई बार कहा देख लो कोई सामान रह तो नहीं गया। इस पर भी एक महाशय चद्दर डाल आए। रास्ते में थैलियों से रुपया निकालकर गठरी बांधी और उसी समय लखनऊ शहर में जा पहुंचे। किसी ने पूछा भी नहीं, कौन हो कहां से आए हो ? इस प्रकार दस आदमियों ने एक गाड़ी को रोककर लूट लिया। उस गाड़ी में चौदह मनुष्य ऐसे थे जिनके पास बन्दुकें या रायफलें थीं। दो अंग्रेज सशस्त्र फौजी जवान भी थे, पर सब शान्त रहे। ड्राइवर महाशय तथा एक इंजीनियर महाशय दोनों का बुरा हाल था। वे दोनों अंग्रेज थे। ड्राइवर महाशय इंजन में लेटे रहे। इंजीनियर महाशय पाखाने में जा छिपे। हमने कह दिया था कि मुसाफिरों से न बोलेंगे, सरकार का माल लूटेंगे। इस कारण मुसाफिर भी शान्ति पूर्वक बैठे रहे। समझे तीस चालीस आदमियों ने गाड़ी को चारों ओर से घेर लिया है। केवल दस युवकों ने इतना बड़ा आतंक फैला दिया। साधारणतः इस बात पर बहुत से मनुष्य विश्वास करने में भी संकोच करेंगे कि दस नवयुवकों ने गाड़ी कड़ी करके लूट ली। जो भी हो वा वास्तव में यही थी। इन दस कार्यकर्त्ताओं में अधिकतर ऐसे थे जो आयु में सिर्फ लगभग बाइस वर्ष के होंगे और जो शरीर से बड़े

पुष्ट भी न थे। इस सफलता को देखकर मेरा साहस बहुत बढ़ गया। मेरा जो विचार था, वह अक्षरशः सत्य सिद्ध हुआ। पुलिस वालों की वीरता का मुझे अन्दाजा था। इस घटना से भविष्य के कार्य की बहुत बड़ी आशा बंध गई। नवयुवकों का भी उत्साह बढ़ गया। जितना कर्जा था निपटा दिया। अस्त्रों की खरीद के लिए लगभग एक हजार रुपए भेज दिए। प्रत्येक केन्द्र के कार्यकर्त्ता को यथास्थान भेज कर दूसरे प्रान्तों में भी कार्य विस्तार करने का निर्णय करके कुछ प्रबन्ध किया। एक युवक दल ने बम बनाने का प्रबन्ध किया, मुझसे भी सहायता चाही। मैंने आर्थिक सहायता देकर अपना एक सदस्य भेजने का वचन दिया। किन्तु कुछ त्रुटियां हुई, जिससे सम्पूर्ण दल अस्त-व्यस्त हो गया।

मैं इस विषय में कुछ भी न जान सका कि दूसरे देश के क्रान्तिकारियों ने प्रारम्भिक अवस्था में हम लोगों की भांति प्रयत्न किया या नहीं। यदि पर्याप्त अनुभव होता तो इतनी साधारण भूलें न करते। त्रुटियों के होते हुए भी कुछ भी न विगड़ता और न कुछ भेद खुलता, न इस अवस्था को पहुंचते। क्योंकि मैंने जो संगठन किया था, उसमें किसी ओर से मुझे कमजोरी न दिखाई देती थी। कोई भी किसी प्रकार की त्रुटि न समझ सकता था। इसी कारण आँख बन्द किए बैठे रहे। किन्तु आस्तीन में सांप छिपा हुआ था, ऐसा गहरा मुंह मारा कि चारों खाने चित्त कर दिया।

जिन्हें हम हार समझे थे गला अपना सजाने को।
वही अब नाग बन बैठे हमें ही काट खाने को॥

नवयुवकों में आपस की होड़ के कारण बहुत वितण्डा तथा कलह भी हो जाती थी, जो भयंकर रूप धारण कर लेती। मेरे पास जव मामला आता तो मैं प्रेमपूर्वक समिति की दशा का अवलोकन कराके सब को शान्त कर देता। कभी नेतृत्व को लेकर वाद-विवाद चल जाता। एक केन्द्र के निरीक्षण से वहां कार्यकर्त्ता अत्यन्त असंतुष्ट थे,क्योंकि निरीक्षक से अनुभवहीनता के कारण कुछ भूलें हो गई थीं। यह अवस्था देख मुझे आश्चर्य हुआ क्योंकि नेतागीरी का भू सब से भयानक होता है। जिस समय से यह भूत खोपड़ी पर सवार होता है, उसी समय से सब काम चौपट हो जाता है। केवल एक दूसरे के दोष देखने में समय व्यतीत होता है। इस प्रकार के समाचार सुन, मैंने सब को एकत्रित कर खूब फटकारा। सब अपनी त्रुटि समझकर पछताए और प्रीतिपूर्वक आपस मिलकर कार्य करने लगे। फिर ऐसी अवस्था हो गई थी कि दलबन्दी की नौबत आ गई थी। एक प्रकार से तो दलबन्दी हो ही गई थी। पर मुझ पर सब की श्रद्धा थी और मेरे वक्तव्य को सब मान लेते थे। सब कुछ होने पर भी मुझे किसी ओर से किसी प्रकार का सन्देह न था। किन्तु परमात्मा को ऐसा ही स्वीकार था, जो इस अवस्था का दर्शन करना पड़ा।

गिरफ्तारी

काकोरी डकैती होने के बाद पुलिस बहुत सचेत हुई। बड़े जोरों के साथ जांच आरम्भ हो गई शाहजहांपुर में कुछ नई मूर्तियों के दर्शन हुए। पुलिस के कुछ विशेष सदस्य मुझ से मिले। चारों ओर शहर में यही चर्चा थी की रेल्वे डकैती किसने कर ली? उन्हीं दिनों शहर में डकैती के एक दो नोट निकल आए, अव तो पुलिस का अनुसन्धान और भी बढ़ने लगा। कई मित्रों ने कहा भी कि सतर्क रहो। दो एक सज्जन ने निश्चिन्तरूपेण समाचार दिया कि मेरी गिरफ्तारी जरूर हो जाएगी। मेरी समझ में कुछ न आया। मैंने विचार किया कि यदि गिरफ्तारी हो भी गई, तो पुलिस को मेरे विरुद्ध कुछ भी प्रमाण न मिल सकेगा। अपनी बुद्धिमत्ता पर कुछ अधिक विश्वास था। अपनी बुद्धि के सामने दूसरों की बुद्धि को तुच्छ समझता था। कुछ यह भी विचार था कि देश की महानुभूति की परीक्षा की जाए। जिस देश पर हम अपना बलिदान देने को उपस्थित हैं, उस देश के वासी हमारे साथ कितनी सहानुभूति रखते हैं? कुछ जेल का अनुभव भी प्राप्त करना था। वास्तव में मैं काम करते-करते थक गया था। भविष्य के कार्यों में अधिक नर हत्या का ध्यान करके मैं हत-बुद्धि-सा हो गया था। मैंने किसी के कहने की कोई भी चिन्ता न की।

रात्रि के समय ग्यारह बजे के लगभग एक मित्र के यहां से अपने घर पर गया। रास्ते में खुफिया पुलिस के सिपाहियों से भेंट हुई। कुछ विशेष रूप से उस समय भी वे मेरी देखभाल कर रहे थे। मैंने कोई चिन्ता न की और घर जाकर सो गया। प्रातःकाल चार वजने पर जगा शौचादि से निवृत्त होने पर बाहर द्वार पर बन्दूक के कुन्दों का शब्द सुनाई दिया। मैं समझ गया कि पुलिस आ गई है। मैं तुरन्त ही द्वार खोलकर बाहर आ गया। एक अफसर ने भड़कर हाथ पकड़ लिया। मैं गिरफ्तार हो गया। मैं केवल एक अंगोछा पहने हुए था। पुलिस वाले को अधिक भय न था। पूछा यदि घर में कोई अस्त्र-शस्त्र हो तो दे दीजिए। मैंने कहा कोई आपत्तिजनक वस्तु घर में नहीं। उन्होंने बड़ी सज्जनता की। मेरे हथकड़ी इत्यादि कुछ न डाली। मकान की तलाशी लेते समय एक पत्र मिल गया जो मेरी जेब में था। कुछ होनहार कि तीन-चार पत्र मैंने लिखे थे। डाकखाने में डालने को भेजे, तव तक डाक निकल चुकी थी। मैंने वे सव इस ख्याल से अपने पास रख लिए थे कि डाक के बम्बे में डाल दूंगा। फिर विचार किया जैसे बम्बे में पड़े रहेंगे वैसे जेब में पड़े हैं। मैं उन पत्रों को वापस घर ले आया। उन्हीं में से एक पत्र आपत्तिजनक था जो पुलिस के हाथ लग गया। गिरफ्तार हो कर पुलिस कोतवाली पहुंचा। वहां पर खुफिया पुलिस के एक अफसर से भेंट हुई। उस समय उन्होंने कुछ ऐसी वातें की, जिन्हें मैं या एक व्यक्ति और जानता था। कोई तीसरा व्यक्ति इस प्रकार से ब्योरेवार नहीं जान सकता था। मुझे वड़ा आश्चर्य हुआ। किन्तु सन्देह इस कारण से न हो सका कि मैं दूसरे व्यक्ति के कार्यों पर अपने शरीर के समान ही विश्वास रखता था शाहजहाँपुर में जिन-जिन व्यक्तियों की गिरफ्तारी हुई, वह भी बडी आश्चर्यजनक प्रतीत होती थी। जिन पर कोई सन्देह भी न करता था, पुलिस उन्हें कैसे जान गई? दूसरे स्थानों पर क्या हुआ, कुछ भी न मालूम हो सका। जेल पहुंच

-शेष पृ. १९ पर

हमारी गुलामी के कारण

-चौधरी चरण सिंह

विशिष्ट रचनाएं

अंग्रेज भारतीयों से किसी भी तरह श्रेष्ठ नहीं थे, इसके बावजूद उन्होंने भारत पर सैकड़ों वर्ष तक शासन किया। इसके पीछे कौन से कारण थे तथा उनके विरोध के संदर्भ में समकालीन कांग्रेस की क्या भूमिका थी, चौधरी चरण सिंह ने इस तथ्य का विश्लेषण इलाहाबाद एवं लखनऊ से प्रकाशित 'अमृत बाजार पत्रिका' के १६ अगस्त १९४७ के 'कांग्रेस विशेषांक' में 'कॉजेज ऑफ अवर स्लेवरी' शीर्ष के लिखे लेख में किया है। उस समय वह उत्तर-प्रदेश सरकार में सभा-सचिव थे।

अंग्रेज हम लोगों से किसी भी तरह श्रेष्ठ नहीं हैं, चाहे हम उनके देश के (आर्थिक) स्त्रोतों सेतुलना करें या उनकी शारीरिक या मानसिक क्षमता से। न ही उनके पास हमें नैतिकता एवं सभ्यता की सीख देने जैसा कुछ था, कम-से-कम जब वे हिन्दुस्तान आए। बल्कि कला, संस्कृति एवं सभ्यता को बाजारू माल मानकर हिन्दुस्तान एवं इंग्लैण्ड के बीच व्यापार हो, तो पलड़ा हिन्दुस्तान का ही भारी पड़ेगा-इस आशय की स्वीकारोक्ति एक अंग्रेज ने ही १८३३ में हाउस ऑफ कॉमन्स की एक समिति के समक्ष की थी। फिर भी अंग्रेजों ने कई पीढ़ियों तक हम पर शासन किया। सवाल उठता है-क्यों ?

इसके दो या तीन मामूली कारण हैं- यूरोपीय अनुशासन एवं सैन्य तकनीकी श्रेष्ठता, दिल्ली स्थित केन्द्रीय सत्ता के क्षीण हो जाने के कारण देश में व्याप्त अराजक स्थिति वगैरह, लेकिन इसका जो सबसे प्रमुख कारण रहा है, वह है हम में राष्ट्रीय विवेक का अभाव।

इंग्लैण्ड ने भारत को जीता एवं भारतीय सैनिकों, जिनका भरण-पोषण भारतीय धन से ही होता था, के जरिए उसे पराधीन बनाए रखा। इंगलैण्ड के खजाने से उसके लिए एक भी पैसा नहीं आता था। १७७३ ई. में ईस्ट इंडिया कम्पनी के पास ५४,००० सैनिक थे, जिनमें अंग्रेजों की संख्या मात्र ९,००० थी, १८०८ ई. में कुल १,५५,००० सैनिकों में से सिर्फ ४५,००० ही अंग्रेज थे, और सन् १८५४ में जब फौजियों की कुल संख्या २,८०,००० हुआ करती थी, तब भी उसमें मात्र ४५,००० ही अंग्रेज सैनिक थे, यानी सेना में औसतन मात्र १६ प्रतिशत ही अंग्रेज रहें। गौर करने की बात यह भी है कि ब्रिटिश कालीन भारत में ऐसा कोई भी निर्णायक युद्ध नहीं हुआ, जिसमें अंग्रेज फौजियों की टुकड़ी ने संख्या बल में अपने बराबर के हिन्दुस्तानी सैनिकों का सामना कर, पराजित किया हो। इतिहास शायद ऐसा कोई उदाहरण प्रस्तुत नहीं करता, जिसमें एक विदेशी विजेता ने सिर्फ तनख्वाह देकर किसी देश में सेना तैयार की हो और जिसका इस्तेमाल उसी देश को जीतने के लिए किया हो। लेकिन अंग्रेजों ने भारत में बिल्कुल यही किया। अतः भारत के बारे में यह नहीं कहा जा सकता कि इसे विदेशियों ने जीता, बल्कि इसने खुद को पराजित किया। सवाल है, ऐसा क्यों हुआ ?

इसका जवाब यह है कि भारत को कभी विदेशियों से ईर्ष्या नहीं हुई, क्योंकि यहां राष्ट्रीय एकता की कोई समझ ही नहीं थी। इसलिए राजनीतिक दृष्टि से (और शायद ही किसी और नजरिये से) भारत का अस्तित्व एक देश जैसा था ही नहीं। अगर सही कहा जाए, तो यहां कोई भी विदेशी नहीं था।

यद्यपि प्राचीन काल की तरफ पीछे मुड़कर हम देखें, तो पाते हैं कि कभी एक आक्रमक जाति, कभी दूसरी, कम या ज्यादा अंतराल पर यहां आती रही, लेकिन विदेशी आक्रामकों का बिना किसी बाधा के लगातार ग्यारहवीं शताब्दी के बाद ही यहां आना शुरू हुआ। विदेशी गुलामी की तरफ भारत तेजी से बढ़ा और राज्य लोगों में देश-भक्ति की भावना लगाने का अपना अधिकार खो बैठा (जिसे कल ही यानी १५ अगस्त १९४७ को ही फिर से वापस पा सका है)। राष्ट्रीयता का बंधन शताब्दियों पहले टूट चुका था तथा स्वदेशी एवं विदेशी के बीच के काफी भेद क्रमशः धीरे-धीरे खत्म हो चुके थे। अंग्रेजों के दृश्य-पटल पर आने से काफी पहल ही राज्य इस स्थिति को पहुंच चुका था, क्योंकि हम यह भी पाते हैं कि मुगलों ने भी बिना किसी प्रकट साधन के विजय प्राप्त की थी। बाबर किसी शक्तिमान राष्ट्र को अपने पीछे लेकर नहीं आया था और न ही किसी ताकतवर राज्य के किसी संगठन पर वह अवलम्बित था।

एकता का अभाव

किसी भी आदमी का यह कर्तव्य माना जाता है कि वह अपने देश के लिए विदेशियों से लड़े लेकिन एक आदमी के लिए देश का वास्तविक अर्थ क्या है ? इस सिद्धांत की व्याख्या करने पर हम पाते हैं कि मनुष्य का लालन-पालन एक समुदाय में होता है, जिसे एक विशाल परिवार के रूप में देखा जा सकता है। इसलिए वह सम्भवतः वहां की भूमि को अपनी मां जैसा समझने लगता है, लेकिन दूसरी तरफ, भारत में यह समुदाय ऐसे (एक रूप) परिवारों से मिलकर नहीं बना है, बल्कि दो या दो से ज्यादा ऐसी जाति, धर्म या भाषा-समूहों से मिलकर बना है, जो अगर देश से नहीं, तो एक-दूसरे से घृणा करते रहे थे। हिन्दुओं जैसे मुख्य धार्मिक समूह के अन्दर ही हजारों जातियां थीं, जिनको एक सूत्र में बांधने जैसा कुछ था ही नहीं।

राष्ट्रीयता संयोजन जिन तत्वों से होता है, उनमें से अग्रणी होता है एक सामूहिक धर्म। हिन्दूवाद के रूप में यह तत्व यहां विधमान था, जिसे यहां की विशाल

बहुसंख्यक आवादी मानने वाली थी लेकिन यह इतना शक्तिशाली साबित नहीं हुआ कि इस देश को संयुक्त कर, एक पूर्ण राजनीतिक अविभाज्य बना सके । वे एक भीड़ के समान, बिना किसी समान भावना एवं हित के, व्यक्तिगत पिंड की तरह, एक-दूसरे से कटे रहे । जाति, उपजाति, परम्परा, एक-दूसरे से भिन्न धार्मिक आस्थाओं, अंधविश्वासों के चलते बंटे होने के कारण जो कुछ सूत्र भी उन्हें एक साथ बांधे रखते थे, वे निहायत ही कमजोर थे । बाहरी दबावों एवं कई शताब्दियों तक एक के वाद एक होते हुए अफगान, तुर्क या मुगल आक्रमणों के कारम उत्पन्न हुए अनुकूल वातावरण के बावजूद हिन्दूवाद में देश-भक्ति का समावेश नहीं हुआ । इसने हमलावर, चाहे वह भूमि पर होकर आया हो या समुद्री रास्तों से, के खिलाफ देशवासियों को जगाने और एकजुट करने का प्रयास कभी नहीं किया । यद्यपि मराठों ने मुगल-साम्राज्य के ऊपर भयानक प्रहार किए थे लेकिन वे, अगर भारतीय नहीं, तो एक हिन्दू-राज्य के तौर पर भी अपने को विकसित करने के बजाए पांच अलग-अलग विभाजित टुकड़ों में बंटे और अंग्रेजों के बहुत आसानी से शिकार बन गए ।

यही कारण था कि जब अंग्रेजों के चरण यहां पड़े, तो भारतीय की बात कौन कहे, एक भी हिन्दू भारत की इस भूमि पर मौजूद नहीं था । यहां के सारे निवासियों को एक सूत्र में बांधने वाला कोई धागा ही नहीं था । हमारी वफादारी संकीर्ण थी, और हमारी दृष्टि सीमित । वेजाति भाषा-समूह या किसी भी तरह धर्म की सीमा से ऊपर उठे ही नहीं । उनकी निष्ठा, 'भारत माता' के प्रति कभी नहीं थी । बारत का मतलब उनके लिए सिर्फ भौगोलिक विस्तार भर था ।

रॉवर्ट क्लाईव एवं वारेन हेस्टिंगस के कई समकालीन या उनके प्रतिद्वन्द्वी भारतीय अपने निजी जीवन में उनसे कहीं ज्यादा श्रेष्ठ थे, लेकिन उन्होंने अपनी वचनबद्धता को कभी नहीं तोड़ा, नतीजतन उनके अपने ही लोग गुलाम बनते गए जबकि दूसरी तरफ अंग्रेजों ने अपने वचन का मान एक बार भी नहीं रखा, अगर वह इंग्लैण्ड के खिलाफ जा रहा हो ।

ऐसा क्यों हुआ ? इसका जवाव पूर्व कथन को दुहराना ही है, क्योंकि समान राष्ट्रीयता या एक सामूहिक मातृभूमि की भावना हमारे पूर्वजों ने अनुप्राणित नहीं की, जबकि ईंग्लैण्ड का अस्तित्व उसकी संतानों के लिए जीवंत था-कुछ ऐसा, जिसके लिए वे कुछ भी त्याग सकते थे ।

कांग्रेस की भूमिका

भारतीय-राष्ट्रीय-कांग्रेस की स्थापना १८८५ ई. में हुई । हमारे नेताओं ने हमारे राजनीतिक पतन के कारणों की ठीक मीमांसा की । उन्होंने पाया कि सदियों से लाखों-करोड़ों की संख्या में लोग भारत में रहते आए हैं, लेकिन एक आदमी भी इस देश के प्रति कभी वफादार नहीं रहा । हम या तो हिन्दू थे या मुसलमान, बंगाली या पंजाबी, ब्राह्मण या राजपूत लेकिन भारतीय कोई भी नहीं । इसलिए वे एक सामूहिक राष्ट्रीयता का विकास करने आगे बढ़े, एक ऐसी वफादारी पैदा करने का संकल्प लिया, जो नस्ल या भाषा या जाति या लिंगसे जुड़ी हुई निष्ठा से ऊपर हो-वफादारी उस मातृभूमि के लिए, जो हम सभी के लिए है, जिसका वाजिब हक बनता है । उन्होंने यहसटीक अनुमान लगाया कि एक बार समान वाजिब हक बनता है । उन्होंने यह सटीक अनुमान लगाया कि एक बार समान राष्ट्रीयता की भावना यहां अस्तित्व में आ गयी और एक बार लोगों में यह समझ पैदा हो गई कि एक-दूसरे पर अपना प्रभुत्व बरकरार रखने के लिए विदेशियों की मदद करना कितनी शर्मनाक वात है, तो गुलामी की जंजीरें जोरदार आवाज के साथ टूटेंगी और बर्तानवी साम्राज्य का देखते-देखते अन्त हो जाएगा ।

सही पूर्वानुमान से महात्मा गाँधीके नेतृत्व में वे अपने सपनों को ठोस आकृति देनेके लिए आगे बड़े । काँग्रेस के प्लेटफार्म से बिना जाति, लिंग या भाषा के विभेद के सारे भारतीयों के लिए एक मंच तैयार होगया, तिरंगा सबका झण्डा बना, 'वंदेमातरम्' एवं 'सारे जहां से अच्छा' सामूहिक गान । महात्मा गाँधी एवं उनके विस्वस्त प्रतिनिधि लोकमान्य तिलक एवं अन्यदूसरे नेता, जो शहीद हो चुके थे- सबके नायक और २६ जनवरी, १५ अगस्त एवं २ अक्टूवर राष्ट्रीय दिवस । हिन्दी या हिन्दुस्तानी को देश में सबके लिए व्यवहृत प्रचलित भाषा के रूप में स्वीकृति मिलने लगी । इतिहास में उल्लिखित कई दूसरे सामूहिक, सांस्कृतिक एवं मनोवैज्ञानिक कारक तथा एक समान भूमि पर एक साथ गुजर बसर करने जैसे तथ्यों पर भी काँग्रेस ने जोर दिया । एक समान, विदेशी नस्ल की सामूहिक गुलामी एवं उसके साथ-साथ कानून, शिक्षा एवं प्रशासन, जिसे विदेशी शासन के दौरान थोपा गया, वही अंततः राष्ट्रीय स्तर पर जागरूकता बढ़ाने वाला सावित हुआ । इसका बुनियादी कारण एक ही था-मिश्रित राष्ट्रीयता का विचार ।

काँग्रेस की सफलता एवं असफलता

गाँधीजी के नेतृत्व में आरम्भ हुए अनेक राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक आंदोलनों के कारण स्वयंसेवकों का एक ऐसा जत्था तैयार होगया, जो नए जीवन की आकांक्षा से स्पंदित, एक नई दृष्टि से अनुप्रेरित एवं अपने गुरू द्वारा सिखाए गए ऊंचे आदर्शों से सराबोर थे । हमारा मानसिक क्षितिज पहली बार विस्तृत हुआ था, जिसके अंदर समग्र भारत एवं उसकी मानवता का समावेश हो चुका था । काँग्रेस समितियों का देहातों में सर्वत्र जाल फैलाया गया और राष्ट्रीयता के संदेशको देश के सुदूर कोनों तक पहुंचाया गया । शताब्दियों बाद भारत पहली बार एक बंधन में बंधा-काँग्रेस संगठन ने इसे एक ही धागे से एक सूत्र में बांधा । 'भारत माता की जय', 'महात्मा गाँधी की जय' एवं 'इंकलाव जिंदाबाद' जैसे पवित्र नारोंकी गूंज से सात लाख गांव प्रतिध्वनित हो उठे । भारत की लोक प्रचलित निष्क्रिय आज्ञाकारिता की प्रवृत्ति का लोप हो चुका था । १९४२ में यह शीर्ष पर पहुंच गया, जब 'भारत छोड़ो' जैसा एक दूसरा नारा उसमें जुड़ा । वे शरारती लड़के, जिन्होंने काँग्रेस के ग्रामीण जुलूसों में भाग लिया था या पिछले बीस

वर्षों के दौरान आयोजित काँग्रेस की सभाओं में राष्ट्रीयगान को स्वर दिया था, वे विदेशी युद्ध मशीनरी को तोड़-फोड़ करने वालों में बदल चुके थे या नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की इंडियन नेशनल आर्मी में भरती हो गए थे। जो उस समय तक अंग्रेज अधिकारियों के सीधे कमान में थे, वे भी अपनी बारी के इन्तजार में थे।

विदेशियों ने देखा कि भारत न सिर्फ जाग चुका है, बल्कि एक समग्र राष्ट्र के रूप में सांस भी ले रहा है, और वह भी कि अब वे उन भारतीय सैनिकों पर भरोसा नहीं कर सकते, जो देखते ही देखते अपने देशवासियों को अपना भाई समझने लगे हैं और अंग्रेजों को विदेशी जो सिर्फ उन्हें हुक्म देता है, भारत पर कब्जा बनाए रखना उनके लिए स्पष्ट तौर पर असम्भव हो गया और बिना युद्ध किए भारत को जल्दी से छोड़ना उन्होंने तय कर लिया। हमारे नेताओं का सपना सच हो चुका था।

लेकिन इस उपलब्धि में असफलता भी शामिल थी। हम लोग अपने बहुसंख्यक मुस्लिम देशवासियों को यह यकीन दिलाने में असफल रहे कि वे अपनी पहचान को समग्र भारत से जोड़कर देखने की आवश्यकता को समझें। इस हद तक कि देश अपने चिह्न-तिरंगा से बाहर हो गया। ऐसा क्यों हुआ, इसके विस्तार में मैं नहीं जाना चाहता, लेकिन इस पर आंसू बहाकर आगे बढूंगा।

मिथ्या प्रचार

आज पूरे भारतीय संघ पर काँग्रेस का वजूद है। सभी राज्यों एवं केन्द्र में काँग्रेस सत्ता में है। इन सरकारों के खिलाफ जो भी आलोचना होती है, चाहे वह न्याय-संगत हो या नहीं, उसके बारे में मुजे यहां कुछ नहीं कहना है। मैं काँग्रेस संगठन की बात करूंगा। एक सघन प्रचार यह हो रहा है कि साधारणतया सभी काँग्रेसी स्वार्थी हैं, इनसे जो अपेक्षाएं थीं, उस हिसाब से ये लोग घटिया साबित हुए हैं और वस्तुतः ये लोग भ्रष्टाचारी हैं और अपने स्वार्थ को देश के पर रखते हैं। कुछ स्वार्थी तत्वों ने विशेषकर इस प्रचार को बढ़ावा दिया है, जो गलतफहमी के कारण या सही जानकारी के उपलब्ध न होने पर आधारित है। जहां तक मेरी जानकारी है, इस प्रचार का एक भाग सही भी हो सकता है और उसके लिए मैं तर्क दूंगा कि हमारे कुल राष्ट्रीय चरित्र में गिरावट आई है। जो गड़बड़ियां हुई हैं, उन्हें उचित ठहराने या घटाकर बताने का मेरा कोई इरादा नहीं है। हम लोगों को अपना नैतिक स्तर उठाना है लेकिन इसमें निश्चय हीकुछ समय लगेगा। हमें सिर्फ यह याद रखना है कि काँग्रेसियों ने देश की पुकार पर उस समय ध्यान दिया और कूद पड़े, जब भारत का राजनीतिक आकाश पुकार पर उस समय ध्यान दिया और कूद पड़े, जब भारत का राजनीतिक आकाश अनिष्ट-सूचक बादलों सें आच्छादित था, जबकि ये आलोचक विदेशियों की उपस्थिति के बिना विचलित हुए अपार सम्पत्ति संचित करने में लगे थे।

गौरवशाली कीर्तिमान

जो बात में घर-घरतक पहुंचाना चाहता हूं, वह यह है कि काँग्रेसियों के खिलाफ जो कुछ भी कहा जाता है, उस सबके बावजूद उसमें से अधिकांश अभी भी उन्हीं आदर्शों से प्रेरित हैं, जिससे प्रेरणा पाकर वेअंग्रेजों से जूझे थे। क्या हमारे देशवासी चीन, बर्मा एवं इन्डोनेशिया की स्थिति पर गौर करेंगे और भारत से उनकी तुलना करेंगे ? मैं चाहता हूं कि वे यह समझें कि अगर काँग्रेस बहुत ज्यादा बदनाम काँग्रेस नहीं होती, तो भारत में आज वही हो रहा होता जो इन देशों में घट रहा है। यह काँग्रेस ही है, जिसने देश को एक सूत्र में थाम रखा है-जो देश एवं दर्व्यवस्था के बीच खड़ी है। उन्हें यह महसूस करना चाहिए कि हम लोगों को एक-दूसरे का गला पकड़ने से अगरकोई रोके हुए है, तो वे हैं गांवों में मौजूद काँग्रेसी स्वयंसेवक, न कि सेना या प्रशासनिक तंत्र। ऊपर चर्चित एशियाई देशों में ऐसा कोई संगठन नहीं है, जो उतना ही विस्तृत, उतना ही शक्तिशाली और जो जनता की निष्ठा प्राप्त होने का दावा करता हो और जिसका उतना ही पुराना अतीत हो, जैसा कि भारत में काँग्रेस का है। हमारे नेताओं ने जीवन भर त्याग किया है और कठिन श्रम के पश्चात् वही हमारे बीच आए हैं, हमें उन पर गर्व है और हमें अपने को खुशनसीब समझना चाहिए कि ऐसे चरित्रवान मनुष्य हमारे पथ-प्रदर्शक हैं। लेकिन इनमें से कोई भी अकेले यह आशा नहीं कर सकता कि वहकाँग्रेस के खिलाफ सफल विद्रोहका नेतृत्व कर सकेगा या एकजुट होकर एक विरोधी पार्टी बनाए और सत्ता हड़पने की कोशिश कर सके। बर्मा या इण्डोनेशिया में ऐसा कोई भी संगठन नहीं है, जिसका इतना संयत प्रभाव हो।

चेतावनी के दो-शब्द

हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि भारत एक ऐसा देश है, जो विखंडनवादी प्रवृत्तियों से भरा हुआ है। यहां साम्यवादियों जैसी विध्वंसक शक्तियां भी हैं, जो अराजकता फैलाने के लिए निरंतर कार्यरत हैं। यदि काँग्रेस को भारत के राजनीतिक परिदृश्य से आज हटाया गया, तो राझ्य रूपी भवन कल ही भहरा कर नीचे गिर पड़ेगा। आलोचक यह भी पाएंगे कि विघटनकारी तत्व देश के उस हिस्से या अर्थव्यवस्था के उस क्षेत्र में ज्यादा सक्रिय हैं, जहां भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस कमजोर है। हमें बापू का आभार मानना चाहिए कि उन्होंने मुक्ति के इस यन्त्र को आग में तपाकर ऐसा बनाया कि आज वह हमारे राजनीति रूपी शरीर को जो अभी पूरी तरह खत्म नहीं हुआ है, केन्द्र की ओर ढकेलने वाली शक्तियों के खिलाफ ढाल का काम कर रहा है। विदेशी विचारों से प्रेरित ये शक्तियां फिर अपना सिर उठा रही हैं।

ये घड़ियां संकटपूर्ण हैं। हमारी राष्ट्रीयता अभी सतह से ज्यादा गहरी नहीं है। इन खतरों को टल जाने दें, देशभक्ति का पाठ लोग सही तौर पर ग्रहण कर लें, देश की अर्थव्यवस्था को मजबूत कर लें ताकि निम्नतम आवश्यकताओं की पूर्ति हो सके। संक्षेप में हमारी स्वतंत्रता जड़ जमा ले, उसके बाद एक-दूसरे को नीचा दिखाने के लिए हमारे पास काफी समय रहेगा। वर्तमान स्थिति को दस साल से ज्यादा नहीं झेलना है।

घोर निद्रा में सोए हुए भारत को जगाने वाले महर्षि दयानन्द

-स्वामी वैदिकानन्द

पाँच हज़ार वर्षों से सोए हुए भारत को जगाने के लिए महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने संकल्प किया था । उनके आविर्भाव के समय हिन्दू जाति अनेक सम्प्रदायों में विभक्त हो चुकी थी । मुग़लों की गुलामी भोगकर अंग्रेज़ों की गुलामी भुगत रही थी । अज्ञानता का साम्राज्य छाया हुआ था ।

धर्म के नाम पर अधर्म, अनाचार, दुराचार, पाखण्ड, अंधविश्वास, सतीप्रथा, मृतक भोज, यज्ञों में पशुबलि जैसे हिंसक कर्म हो रहे थे । आज भी कहीं-कहीं पशुबलि दी जा रही हैं । और सभी बड़े-बड़े पौराणिक यज्ञों में तथा हिन्दुओं के गृहप्रवेश के समय भूरे कोले को तलवार से काटकर पशुवलि की धार्मिक क्रिया को क्रियान्वित कराने की मान्यता दे रखी है । सामाजिक कुरीतियाँ, बाल विवाह, १४ वर्ष की बालिकाओं का विवाह साठ वर्ष के वृद्ध से किया जा रहा था । परदा प्रथा तथा छोटी-छोटी बालिकाओं के विधवा हो जाने पर जीवनभर समस्त शुभ कार्यों में सम्मिलित होने पर प्रतिबंध था । बालिकाओं को शिक्षा से वंचित कर रखा था । बालिकाओं के लिए सम्पूर्ण भारत में एक भी विद्यालय नहीं था । छूआछूत आदि बुराइयों से देश पीड़ित था । महर्षि स्वामी दयानन्द १९वीं शताब्दी के उच्चकोटि के वेदज्ञ, वेदमूर्ति, संस्कृत के उद्भट विद्वान, व्याकरणाचार्य थे ।

महषि४ स्वामी दयानन्द जी ने लिखा है कि वेद ही सब सत्य विद्याओं के ग्रंथ हैं और वेद ईश्वर प्रदत्त ज्ञान है । वेद के समान अन्य सम्प्रदायों के ग्रंथ नहीं हैं । सभी सम्प्रदायों के ग्रंथ मनुष्यों के लिखे हुवे हैं । उनमें असत्य, अश्लील (गंदे), अवैज्ञानिक, अधर्म तथा मनुष्यता के विपरीत बातों की भरमार है । इसलिए स्वामी दयानन्द जी ने सभी सम्प्रदायों के विद्वानों से शास्त्रार्थ करके सिद्ध किया कि वेद ही ईश्वरीय ज्ञान है । और ईश्वर सच्चिदानंदस्वरूप निराकार है, जिसकी कोई आकृति नहीं है । ईश्वर सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा (जिसका जन्म नहीं होता है), अनन्त, सर्वाधार, सर्वेश्वर सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य पवित्र और सृष्टिकर्त्ता है । उसकी ही उपासना करनी चाहिए ।

स्वामी दयानन्द जी महाराज परम आस्तिक थे । वे ईश्वर विश्वासी तो थे ही, उन्होंने विश्वास के साथ ईश्वर की आज्ञाओं का पालन करते हुए उन्हें अपने जीवन में चरितार्थ किया था । उन्होंने लिखा कि वेद का पढ़ना-पढ़ाना, सुनना-सुनाना सब मनुष्यों का परम धर्म है ।

भक्त प्रवर दयानन्द ने अपना सकल जीवन भगवच्चरणों ने ही समर्पित कर दिया था । उनका एक-एक क्षण प्रभु सेवा में ही अर्पित था । उन्होंने अपने ग्रंथों में भी स्थान-स्थान पर प्रभु शरणगति का पावन उपदेश दिया है । वे लिखते हैं कि भगवत् भक्त को चाहिए कि वह अपनी आत्मा का सर्वदा भगवान् की ही आज्ञा में अपर्ण कर दे । उसी प्रकार स्वामी जी ने ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका के उपासना प्रकरण में लिखा है- "हम मनुष्यों को चाहिए कि अपनी आयु को ईश्वर सेवा और उसकी आज्ञा पालन में ही अर्पित कर दें । हम अपने प्राणों को भी भगवान् को अर्पण कर देवें । हमें अपनी समस्त इंद्रियों को, सब सुखों के साधनों को, यज्ञादि शुभ कर्मों को भी प्रभु की प्रसन्नता में अर्पण कर देना चाहिए । इस प्रकार जो मनुष्य अपने सर्वस्व को प्रभु के अर्पण कर देता है उसके लिए परम दयालु प्रभु सब सुखों को प्रदान करते हैं ।

जो परमात्मा पापों से मुक्त, बुढ़ापा, मृत्यु, दुःख, भूख-प्यास से रहित है और सत्यकाम सत्य संकल्प वाला है, उसकी खोज और जानने की इच्छा करना प्रत्येक मनुष्य का धर्म है । जो सब गुण-कर्म-विद्या युक्त है, जिसमें पृथ्वी-सूर्यादि लोक स्थित हैं और जो आकाश के समान व्यापक सब देवों के देव परमेश्वर हैं, उसको जो मनुष्य न जानते न मानते और उसका ध्यान नहीं करते हैं, वे नास्तिक मंदमति सदा दुःख सागर में डूबे रहते हैं । इसलिए सर्वदा उसी परमात्मा को जानकर जो लोग निस्वार्थ भाव से सेवा व सहयोग करते हैं वे सब मनुष्य सुखी होते हैं ।

उस शुद्ध चेतन स्वरूप परमात्मा को हम धारण करें । अर्थात् परमात्मा की आज्ञाओं का पालन करें । इसलिए कि वह परमात्मा हमारी आत्मा व बुद्धि को दुष्टाचार, अधर्म, पापकर्म के मार्ग से हटाकर श्रेष्ठ और सत्य के मार्ग पर चलावे । उस परमात्मा के समान दूसरा कोई नहीं है और परमात्मा से बड़ा भी कोई दूसरा नहीं है । इसलिए परमात्मा हमारी माता, पिता, राजा, न्यायधीश और सब सुखों का देने वाला है । ऐसे परमात्मा को प्राप्त करने का प्रयत्न करना ही प्रत्येक मुष्य का धर्म है ।

स्वामी जी लिखते है कि मैं अपना धर्म उसी को मानता हूँ कि जो तीन काल में सब को एकसा मानने योग्य है । मेरी कोई नई कल्पना या सम्प्रदाय चलाने का लेशमात्र भी विचार नहीं है, किन्तु जो सत्य है, उसको मानना, मनवाना और जो असत्य है, उसको छोड़ना और छुड़वाना मेरा धर्म है । यदि मैं किसी नए सम्प्रदाय का नाम रखता जैसे वैष्णव, शैव आदि । मैं तो परमपिता परमात्मा की वाणी वेद को ही मानता हूँ और मनवाता हूँ । आर्यावर्त तथा अन्य देशों में प्रचलित जो अधर्मयुक्त सम्प्रदाय हैं, उनको स्वीकार नहीं करता हूँ । क्योंकि इन सम्प्रदाओं को स्वीकार करना मनुष्य धर्म से विपरीत है । मुझमें पूर्व ऋषियों, मुनियों के चरण की धूल के एक कण के बराबर बी समानता व क्षमता तथा योग्यता नहीं है । मैं तो उन्हीं के बताए हुए वेद मार्ग को संसार में मनुष्य मात्र के सुख के लिए पुनः प्रस्तुत कर रहा हूँ ।

-शेष पृ. १२ पर

सब मतों का आदिमूल : वैदिक धर्म

-डॉ. सुदर्शनदेव आचार्य

संसार में सबसे प्राचीन पुस्तक वेद है। जैसा कि प्रो. मैक्समूलर महोदय ने लिखा है- ... अर्थात् संसार के पुस्तकालय में सबसे प्राचीन प्राचीन ग्रन्थ ऋग्वेद है।

यूरोप के विद्वान् वेदो को ६-७ हजार वर्ष पुराना मानते हैं। आर्यों का सिद्धान्त है, कि वेद सृष्टि रचना के समय ही अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा इन चार ऋषियों के पवित्र हृदयों में ईश्वर के द्वारा प्रकाशित किए गए। आर्य लोग सृष्टि संवत् मानते हैं और इसका संकल्प में पाठ भी करते हैं। **"द्वितीयप्रहरार्धे वैवस्वतमन्वन्तरे-ऽष्टा विंशतितमे वैवस्वतमन्वन्तरे-ऽष्टाविंशति तमे चतुर्युगे कलियुगे कलिप्रथमचरणे"** अर्थात् यह सृष्टि का दूसरा पहर चल रहा है। जिसमें वैवस्वतमन्वन्तर अब है, और इसकी २८ वीं चतुर्युगी बीत रही है, तथा उसका यह कलियुग है,

जिसको आरम्भ हुए पांच हजार वर्ष से अधिक हो चुके हैं।

इससे यह सिद्ध होता है कि वैदिक धर्म सृष्टि रचना के साथ ही आरम्भ हुआ। अतः संसार का सबसे पुराना धर्म है। वैदिक धर्म का प्रचार भूखण्ड में महाभारत काल तक रहा और उस समय तक संसार में अन्य कोई मत (धर्म) पैदा नहीं हुआ था। अन्य सभी मत महाभारत काल के पश्चात् पांच हजार वर्ष के अन्दर ही प्रचलित हुए हैं। ये वैदिक धर्म के ही एक दो सिद्धान्तों को लेकर, और उनमें कुछ अपनी बातें मिलाकर आगे बढे हैं।

१) **पारसी मत**-वैदिक धर्म के पश्चात् सबसे पुराना धर्म पारसी धर्म है। जिसको लगभग ४५०० वर्ष होते हैं। इसके प्रवर्तक श्री जरदुश्त महोदय थे। जो हजरत मूसा से ५०० वर्ष पहले फारस में उत्पन्न हुए थे। उनकी बनाई हुई पारसियों की पवित्र पुस्तक **'जिन्दावस्ता'** है जो कि वेदों को आधार मानकर लिखी गई है। सर विलियन जोंस ने लिखा है, जब मैंने जिन्दावस्ता की शब्दावली को देखा तो मैं महान् आश्चर्य में पड़ गया कि उसके प्रत्येक १० शब्दों में से ७ शब्द शुद्ध संस्कृत भाषा के हैं। विद्वानों का मत है कि जिन्दावस्ता के बहुत से वचनों को शुद्ध संस्कृत भाषा में बदला जा सकता है।

पारसी लोग स्वयं को 'आर्य' मानते थे और आर्यों का बड़ा मान करते थे जिनको मजद (मेध-यज्ञ) ने उत्पन्न किया। पारसी धर्म के निम्नलिखत सिद्धान्त वैदिक धर्म से लिए गए हैं।

१) जिन्दावस्ता मेंचार वर्ण माने हैं- पुरोहित, योद्धा, व्यापारी और मजदूर। ये आर्यों के ब्राह्मण, क्षत्रिय वैश्य और शूद्र चार वर्ण नहीं तो औरक्या हैं ?

२) पारसी लोग यज्ञोपवीत संस्कार बड़े धूमधाम से मनाते हैं।

३) पारसी लोग प्रतिदिन अग्नि में अपने मन्त्रों से होम करते हैं। वे वैदिक सोम को (होम बूटी) कहते हैं।

४) पारसी लोग एक पुनर्जन्म में विस्वास करते हैं।

६) पारसी लोग सृष्टि को प्रवाह से अनादि मानते हैं। चार युगों की मान्यता वैदिक धर्म के अनुसार समझते हैं।

७) वे गोरक्षा करना अपना धर्म समझते हैं।

८) "शन्नो देवी" और गायत्री मन्त्र थोड़े से परिवर्तन के साथ जिन्दावस्ता में मिलता है। पारसी लोग इनका संध्या केरूप में पाठ करते हैं।

२) **यहूदी मत**-पारसी मत के प्रवर्त्तक श्री जरदुश्त महोदय के समकालीन श्री हजरत इब्राहिम थे। श्री इब्राहिम सैमिटिक वंश के थे। श्री इब्राहिम के बाद हीसेमिटिक वंश के लोगों में यहूदी मत प्चलित हुआ। इस मत को चले हुए लगभग ५००० वर्ष होते हैं। सेमिटिक लोगों का जबपारसी लोगों से सम्पर्क हुआ तब उनकी बहुत सी बातें लेकर हजरत मूसा ने यहूदी मत का प्रचार किया। बाइबिल की पुरानी किताब ही उनका धर्मग्रन्थ है। सैतान का मानना, देवताओं का विचार, जगत् की उत्पत्ति, स्वर्ग और नरक आदि के सिद्धान्त यहूदी मत में पारसी मत से लिए गए हैं।

३) **बौद्धमत**-महाभारत के युद्ध के पश्चात् वैदिक धर्म का ह्रास होने लगा। शूद्र और स्त्री दोनों के लिए वेदों का पढ़ना-पढ़ाना बंद कर दिया गया। देवताओं के नाम से पशुओं की बलि दी जाने लगी। वैदिक यज्ञों में रक्त की धाराएं बहने लगी। ऐसे समय में आज से लगभग २५०० वर्ष पूर्व भारत में भगवान् बुद्ध का जन्म हुआ। उन्होंने अपने समय में प्रचलित अवैदिक प्रथाओं का जोरदार खण्डन किया। अभिमानी तथा पाखण्डी ब्राह्मणों को मुंहतोड़ उत्तर दिए। महात्मा बुद्ध के शब्दों का लक्ष्य पढ़िए-

न जटाहि न गोत्रेन न जच्चा होति ब्राह्मणो। यदि सच्चं च धम्मो च सो सुखी स च ब्राह्मणो। (धम्मपद)

अर्थ-कोई मनुष्य जटा रखने, गोत्र अथवा जाति से ब्राह्मण नहीं हो सकता। सच्चा ब्राह्मण वह है जिसमें सत्य और धर्म है।

महात्मा बुद्ध का कथन है कि मैं कोई नया धर्म नहीं चला रहा हूँ। मैं प्राचीन वैदिक धर्म का ही प्रचार कर रहा हूँ। महात्मा बुद्ध ने सत्य पर बहुत बल दिया। उनके आठ सत्य हैं- सत्य-विश्वास, सत्य-कामना, सत्यवचन, सत्य व्यवहार, जीवन निर्वाह का सत्य उपाय, सत्य उद्योग, सत्य विचार और सत्य संकल्प।

"अहिंसो परमोधर्म" महात्मा बुद्ध के उपदेशों का मूलमन्त्र है। पुनर्जन्म, पिता सेवा, दया, सदाचार आदि के सिद्धान्त वैदिक धर्म के समान बौद्धमत में भी माने जाते हैं।

...पृ. १० का शेष.

४) **ईसाई मत**-ईसाई मत को लगभग २००० वर्ष हुए हैं। इसके प्रवर्तक हजरत ईसा मसीह थे। ये फिलिस्तीन के जैरूसलम नगर में उत्पन्न हुए थे। उनके जन्म से पहले सम्राट अशोक के द्वारा भेजे गए बौद्ध भिक्षु और उपदेशक लोग फिलिस्तीन, सीरिया और मिश्र आदि देशों में प्रचारार्थ पहुंच चुके थे। इसलिए हजरत ईसामसीह पर बौद्ध मत का प्रभाव था। हजरत ईसामसीह ईसाई मत को आरम्भ करने से पूर्व भारत में आए थे। वे पंजाब और कांशी में भ्रमण करके बौद्धों के प्रसिद्ध केन्द्र गया तो बौद्ध भिक्षुओं से भी मिले थे। तत्पश्चात् वे तिब्बत भी गए। इसलिए ईसाई मत के अनेक सिद्धान्त बौद्धमत से मिलते हैं। ईसाई मत के अनेक सिद्धान्त बौद्धमत से मिलते हैं।

ईसाई मत को ग्रहण करते समय **'बपतिस्मा'** दिया जाता है। यह हजरत ईसामसीह का चलाया हुआ नहीं है। यह तो बौद्ध धर्म की रीति है। बौद्ध धर्म प्रवेश संस्कार जल से किया जाता है। जिसका नाम **'अभिषेक'** है। यह अभिषेक वैदिक धर्म से ही बौद्ध धर्म में गया है।

बौद्ध धर्म और ईसाईमत में बड़ी समानता दिखाई देती है। महात्मा बुद्ध का उपदेश हैं-''क्रोध को प्रेम से जीतना चाहिए। बुराई को भलाई, से, लालच को उदारता से और झूठ को सत्य से (धम्मपद)। हजरत ईसामसीह का उपदेश है- ''अपने बैरियों को प्यार करो। जो तुम्हें शाप दे उनको आशीष दो। जो तुम से बैर करे उनकी भलाई करो। जो तुम्हारा अपमान करे, और सतावे उनके लिए प्रार्थना करो। (बाइबिल)।''

५) **इस्लाम मत**-हजरत मुहम्मद साहब के जन्म से पहले अरब देश में यहूदी और ईसाई मत का प्रचार था। हजरत मुहम्मद ने आज से लगभग १४०० वर्ष पहले अरब में जन्म लेकर कहां इस्लाम मत का प्रचार किया। उस समय में प्रचलित यहूदी और ईसाई मत का प्रभाव इस्लाम मत पर पड़ा। इस विषय में श्री सर सैय्यद अहमद खां ने लिखा है कि- ''इस्लाम धर्म में किसी दूसरे को पूजनीय मानना, और मूर्तिपूजा निषेध, यहूदी मत के समान हैं। सबसे उत्तम शिक्षाएं यहूदी मत और इस्लाम में एक ही है। जैसे चोरी न करना, व्यभिचार से बचना, माता-पिता का आदर करना, झूठी साक्षी न देना इत्यादि। नमाज का समय और संख्या भी यहूदी मत से मिलती हैं। नमाज के बुलाने के लिए यहूदियों में नरसिंह बजाया जाता है। ईसाईयों में घण्टा बजाया जाता है और मुसलमानों में जां लगाई जाती है। इस्लामी मत में बलिदानों का विधान हैं, रोजे रखे जाते हैं। जुम्मा को पवित्र दिन मानते हैं, खतना कराते हैं, निकाह कराते हैं। शैतान का अस्तित्व पापों का दण्ड, स्वर्ग और नरक आदि का वर्णन ये सब बातें यहूदीमत से मिलती हैं।

इस ऊपर लिखित विवेचन से पता चलता है कि इस्लामी मत का मूल यहूदी आदि मत है। ईसाईमत का मूल यहूदी मत और बोद्धमत है। बौद्धमत और यहूदी मत का मूल पारसी मत है। पारसी और बौद्धमत का मूल प्राचीन वैदिक धर्म है।

आज संसार में पारसी मत, यहूदीमत, ईस्लामी मत, बौद्धमत और ईसाईयत ये बड़े धर्म माने जाते हैं शेष छोटे-छोटे मत तो भारत में ही उत्पन्न होते है। इन सबका आधार प्राचीन वैदिक धर्म है।

वैदिक धर्म का उद्धार-वैदिक धर्म महाभारत काल तक अपने शुद्ध अस्तित्व में रहा। तत्पश्चात् अन्य मतों के प्रचलन से वह धूमिल हो गया। आज से लगभग १९८ वर्ष पूर्व सन् १९२८ में गुजरात के टंकारा नामक ग्राम में महर्षि दयानन्द का जन्म हुआ। उन्होंने अपने अतुलयोगबल से तथा अनुपम ब्रह्मचर्य की साधना से लुप्त वैदिक धर्म का पुनरुद्धार किया। अवैदिक मतों का बहिष्कार तथा वैदिक धर्म का सत्कार किया। यदि संसार के सब प्रचलित मत अपने मूल वैदिक धर्म को पहचान कर इसे स्वीकार कर ले, तो आज सारे विवाद समाप्त होकर संसार में सुख शान्ति का साम्राज्य स्थापित हो सकता है।

-अध्यक्ष, संस्कृत सेवा संस्थान
७७६/३४, हरिसिंह कॉलोनी, रोहतक

स्वामी जी ने लिखा कि सत्य और न्याय का आचरण करना धर्म है। सत्य और न्याय का आचरण करना धर्म है। सत्य और न्याय का मूल वेद में है। इसलिए स्वामी जी ने बताया कि **'वेदोऽखिलो धर्म मूलम्'** धर्म का मूल वेद है।

पाठकगण, हम मनुष्यों ने वेद के धर्म को भुला दिया। महाभारत युद्ध के पश्चात् वेद का पढ़ना-पढ़ाना समाप्त हो गया। पांच हज़ार वर्ष के पश्चात् एक मात्र ऋषि उत्पन्न हुआ, जिसका नाम है दयानन्द!

स्वामी दयानन्द ने ही वेदों के माध्यम से धर्म के वास्तविक स्वरूप को हमारे सामने रखा। हमने धर्म के स्वरूप को अभी तक निकृत रूप में ही स्वीकार कर रखा है। किन्तु सतीप्रथा, मृतक भोज, पशुवलि, बाल विवाह, वृद्ध विवाह, परदा प्रथा आदि कुरीतयाँ लगभग स्वामी जी के प्रयत्न से समाप्त होगई हैं और स्त्रियों की शिक्षा व वेद पढ़ने का अधिकार भी प्राप्त हो गया है। स्वामी जी की कृपा से विशेष रूप से भारत में महिलाएँ, प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री, सासंद, विधायक, पार्षद, पंच, सरपंच बन सकती है। सेना तथा पुलिस अधिकारी, आयुक्त, ज़िलाधीश के पद पर प्रतिष्ठित होरही हैं।

स्वामी दयानन्द वेदों का शंखनाद करने वाले महापुरुष थे। ईश्वर विश्वासी, भारतीय संस्कृति के पुनरुद्धारक, भारतीय स्वतंत्रता के मूलमंत्र दाता, हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में प्रतिष्ठित कराने वाले, नारी जाति के सम्मान-दाता, कुरीतियों को मिटाने वाले, सदैव सत्य को मानने वाले, सदा सत्यवादी, सत्य वक्ता और संसार से सामप्रदायिकता को मिटाने वाले राजा हरिश्चंद्र, भक्त ध्रुव, भक्त प्रहलाद आदि सत्यवादी महापुरुषों की परम्परा का निर्वा करने वाले ऋषि दयानन्द ने कहा था कि-मैं सत्य पथ का पथिक हूँ। यदि मेरी अंगुलियों को मोमबत्ती की तरह एक-एक करके अथवा एक साथ जला दिया जावे, तो भी असत्य नहीं बोलूंगा।

आधुनिक युग के महान् ऋषि को उनके एकसौ तेईसवें बलिदान-दिवस के अवसर पर शत-शत नमन! ('दिव्ययुग से साभार)

गुरुः साक्षात् परब्रह्म

-वेद प्रकाश शास्त्री

मनुदेव जी 'अभय' **"गुरुवन्दना और यम-नियम की शिक्षा"** के अन्तर्गत गुरुब्रह्मा पर टिप्पणी करते हुए लिखते हैं-

"किसी विद्वान् ने भावुकतावश अतिशयोक्तिपूर्ण यह श्लोक-

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥

रचकर साधन (गुरु) अथवा मध्यस्थ को साध्य बनाकर अपनी श्रद्धा अभिव्यक्त की है। जब कि ब्रह्मा, विष्णु और महेश के तत्सम यह जीवात्मा रुपी मनुष्य अपनी क्षमता नहीं रखता।"

वस्तुतः स्कन्दपुराण उत्तरखण्ड, संतकुमार संहिता के अन्तर्गत शिवपार्वती संवाद के गुरु सम्बन्धी तीन अध्याय हैं । गुरुर्ब्रह्मा पहले अध्याय का श्लोक ५४ है। कालान्तर में यही तीन अभ्यास "गुरुगीता" के नाम से प्रसिद्ध हो गए।

पौराणिक विद्वानों ने तो गुरु को ब्रह्मा (कमल से उत्पन्न, सृष्टिकर्ता), विष्णु (क्षीर सागर में विराजमान जगत् का पालक) महेश्वर (कैलाशवासी शिव, जगत् के संहारक) और परब्रह्म (ईश्वर) कह उपाधि दी हुई है। ऐसे गुरुओं के सामने तो ईश्वर भी फीका पड़ जाता है। और अधिक क्या कहें ?

अनेक विचारशील वैदिक विद्वानों को इस कथन पर आपत्ति है और होनी भी चाहिए। क्योंकि इसमें गुरु को ब्रह्मा, विष्णु महेश और ब्रह्म अर्थात् ईश्वर बताया गया है, जो उचित नहीं। यद्यपि एतादृश वैदिक विद्वानों का कथन सत्य है स्थापि आइए नकारात्मक दृष्टिकोण के साथ-साथ सकारात्मक दृष्टिकोण से भी विचार करने का प्रयत्न करें।

वस्तुतः इसमें रुपक केद्वारा गुरु की ब्रह्मा, विष्णु, शिव और ब्रह्म से गुरु की अपना दी गई है। इसमें उपमान-उपमेय में अभेदारोप किया गया है। अतः यहां रूपक अलंकार चाहिए। परन्तु उपमान-उपमेय रहते तो अलग-अलग ही हैं, केवल अतिशय साम्यता प्रकट करने के कारण एक रुपता हो गई है। आइए, इस पर विचार करें-

ब्रहमा का अर्थ है-रचयिता, निर्माता। ब्रह्मा (ईश्वर) सृष्टि का निर्माण करता है और गुरु छात्र के जीवन का निर्माण करता है तभी छात्र/शिष्य सही अर्थों ने मनुष्य बनता है। इसीलिए मनुष्य को द्विज कहा गया है। क्योंकि एक बार माता से जन्म होता है और दुबारा गुरु से शिक्षा पाकर। अतः 'ब्रह्मा' के रूप में गुरु छात्र के जीवन का निर्माता है।

'ब्रह्मा' उस ऋषि का भी नाम है जिसे अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा ऋषियों ने ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद का ज्ञान प्रदान किया था। ब्रह्मा ने इन ऋषियों से चारों वेदों को ज्ञान प्राप्त करके अन्य सभी को उनका उपदेश किया था। इसी प्रकार गुरु भी अपने छात्रों को वेदों का उपदेश करता है। अतः वह भी ब्रह्मा है। यज्ञ का संचालन भी तो 'ब्रह्मा' की अध्यक्षता में ही होता है। वेदादि सास्त्रों का स्वाध्याय ब्रह्मयज्ञ है और गुरुकुल में ब्रह्मयज्ञ का संचालक 'ब्रह्मा' गुरु अथवा आचार्य है। इस प्रकार ब्रह्मा के रूप में गुरु अपने शिष्यों को शिक्षा देकर उनके चरित्र का निर्माण करता है। गुणों में वृद्धि करता है।

एक बार की बात है, एक राजा ने अपने पुत्र को गुरुकुल में प्रवेश दिलाया। शिक्षा समाप्ति का समय आने पर वह गुरुकुल में गया और आचार्य से पूछा- "आचार्य वर ! क्या मेरे पुत्र की शिक्षा पूरी हो गई ?"

आचार्य ने उत्तर दिया-"बस, थोड़ी सी कसर रह गई है।"

राजा को अतिथिशाला में ठहराया गया। कुछ देर बाद आचार्य ने राजकुमार को अतिथिशाला में झाड़ू लगाने के लिए भेजा, जहां राजा ठहरा था।

राजकुमार झाड़ू लेकर राजा के कमरे में पहुंचा। राजा यह देखकर आश्चर्यचकित रह गया। कहां यह झाड़ू ! भला इसका क्या सम्बन्ध ? वह बोला- 'पुत्र ! तुम राजकुमार हो। कुछ तो सोचो। झाड़ू लगाना तुम्हारा काम नहीं।"

पुत्र ने उत्तर दिया- "यह गुरु की आज्ञा है। मैं इसका उल्लंघन नहीं कर सकता।"

राजा ने वहुत समझाया परन्तु पुत्र न माना और झाड़ू लगाकर चला गया।

कुछ देर बाद आचार्य जी आए और राजा से कहने लगे- "आपके राजकुमार की शिक्षा पूरी हो गई।"

राजा अत्यधिक हैरान होकर बोला- "गुरुदेव ! अभी थोड़ी देर पहले तो आप कह रहे थे कि थोड़ी सी शिक्षा बाकी रह गई है और अव आप कह रहे हैं कि शिक्षा पूरी हो गई।"

आचार्य जी ने उत्तर दिया- "राजन् मैं राजकुमार की परीक्षा ले रहा था कि कहीं उसमें अभिमान तो नहीं ? इसीलिए मैंने उसे आपके पास झाड़ू लगाने भेजा था, जिससे पता चले कि आपको देखकर आनाकानी तो नहीं करता कि मैं राजकुमार हूँ, झाड़ू क्यों लगाऊँ ? परन्तु उसने आज्ञा का पालन किया। इससे सिद्ध हो गया कि अव उसकी शिक्षा पूर्ण हो गई है। उसमें किंचित् भी अभिमान नहीं है।"

यह सुनना था कि राजा आचार्य जीके पैरों में गिर पड़ा। बोला- "धन्य हैं गुरुदेव।"

आज कहां हैं ऐसे गुरु और कहा है ऐसे शिष्य ? क्या आचार्य ब्रह्मा से कम है, जो ऐसे उज्ज्वल चरित्र का निर्माण करता है। ब्रह्मा तो केवल जन्म हीदेता है, परन्तु गुरु (शिक्षक) उसे शिक्षा देकर वस्तुतः मनुष्य बनाकर समाज में रहने योग्य स्थान प्रदान करता है। यदि वह शिक्षा न दे तो मनुष्य

पशु बन जाए-**विद्याविहीनः पशुः । साहित्य संगीतकलाविहीनः साक्षात् पशुः पुच्छविषाण हीनः ॥**

वर्तमान समय में ऐसी गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली न होने से परिणाम सबके सामने है । सिक्षा में भी अर्थ की प्रधानता है । आधुनिक गुरु शिष्या की अस्मत लूट लेता है । शिष्य गुरुओं की पिटाई कर देता है । हत्या करने से भी नहीं चूकता । शिक्षा का स्तर ह्रासोन्मुख है ।

ब्रह्मा-निर्माता के सम्बन्ध में एक अन्य दृष्टांत देना अप्रासंगिक न होगा ।

एक राजा का अन्तिम समय निकट था । उसका मन्त्री अत्यन्त कुशल, बुद्धिमान् एवं कर्त्तव्यनिष्ठ था । राजकुमार की आयु अत्यल्प थी । राजकुमार की आयु अत्यल्प थी सासन चलाने का ज्ञान न था । राना ने मन्त्री को बुलाकर कहा-मन्त्रिवर ! मेरा अन्तिम समय निकट है । राजकुमार शासन चलाने में असमर्थ है । अतः आप शासन चलाते हुए उसे समस्त शिक्षा देकर शासन योग्य बनाकर उत्तराधिकारी बना देना ।

मन्त्री ने आज्ञा शिरोधार्य कर ली । मन्त्री अनुशासनप्रिय था । अतः कठोर अनुशासन में राजकुमार को शिक्षा देकर एक कुशल शासक बनाकर राज्य का उत्तराधिकारी घोषित कर दिया । राजकुमार ने भी बड़ी कुशलता के साथ शासनकार्य संभाल लिया । प्रजा बड़ी सुखी थी । राजकुमार के गीत गाने लगी ।

इतना होने पर भी राजकुमार मंत्री का कठोर अनुशासन भूला नहीं था । जब शासन पर पूर्णरुपेण अधिपत्य कायम कर लिया तो मंत्री को दर-दर की ठोकरें खाने के लिए बाहर निकाल दिया । मंत्री का बुरा हाल हो गया । न रहने का स्थान, न खाने का प्रबन्ध । एक दिन राजकुमार हाथी पर सावर होकर जिस मार्ग से जा रहा था, उसी मार्ग में एक पेड़ के नीचे मंत्री दिखाई पड़ गया ।

राजकुमार बोला- ''कहिए मंत्री जी ! अब कठिनाइयों का पता चला कि नहीं ? कितनी यातनाएं आपने हमें दी थीं ? अभी तक भूला नहीं हूँ ।''

मंत्री बड़ी ही धीरता एवं शालीनता के साथ राजकुमार से बोला- ''रामजकुमार ! मुझे जो कठिनाइयां, यातनाएं सहनी पड़ रही हैं, उनकी चिंता नहीं अपितु प्रसन्नता की बात यह है कि मैंने जिस कठोर अनुशासन में राजकुमार को राजनीति का पाठ पढ़ाया था, उससे प्रजा अत्यन्त खुशहाल है, राजकुमार का गुणगान करती है । इससे बढ़कर भला और क्या हो सकता है ? मैंने तो राजा को दिए गए वचन का पालन किया है ।'' यह सुनकर राजकुमार हाथी से नीचे उतर पड़ा । मंत्री के चरणों में सिर झुका दिया । ''क्षमा करे गुरुदेव ! भारी भूल हुई । अज्ञानतावश मैं यथार्थता को समझने में असमर्थ रहा ।'' राजकुमार ने मंत्री को फिर वही मान सम्मान प्रदान किया । यह है व्यक्ति का निर्माण ! भला ब्रह्मा रूपी गुरु के अतिरिक्त ऐसा गुरुतर कार्य ोर कौन कर सकता है ?

विष्णु संसार का पालक है, रक्षक है । आचार्य भी छात्र को गुरुकुल में रखकर उसकी रक्षा करता है, पालना करता है क्योंकि गुरु के लिए शिष्य पुत्रवत् हैं । गुरु का कुल ये शिष्य ही हैं । जब तक छात्र गुरुकुल में रहता है तब तक उसका सम्पूर्ण उत्तरदायित्व गुरु पर रहता है । अतः गुरु आचार्य विष्णुरूप में शिष्य की रक्षा, पालना करता है ।

शिव (महेश्वर) विनाश-संहार प्रलय के लिए प्रसिद्ध है । गुरु भी छात्र को उच्चकोटि की शिक्षा देकर उसके अज्ञानान्धकार का नाश कर देता है । अन्याय के विनाश के लिए प्रेरित करता है ।

अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जनशलाकया । चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥

आचार्य चाणक्य ने तो चन्द्रगुप्त मौर्य को शिक्षा देकर नन्द के साम्राज्य को मिट्टी में मिला दिया था । यह है आचार्य की शिक्षा का शिवरुप !गुरु विरजानन्द ने दयानन्द सदृश शि,ष्य के द्वारा संसार से अज्ञान, पाखण्ड, अन्धविश्वास, छुआछूत, भेदभाव आदि कुरीतियों को दूर वेद-सन्देश फैला दिया था ।

''गुरु साक्षात् परब्रह्म'' अर्थात् गुरु समस्त शास्त्रों में सर्वोत्कृष्ट वेदज्ञान का भंडार है अथवा अपने विषय का विशेषज्ञ है । चिकित्सा, विज्ञान, वाणिज्य, कला, राजनीति, धर्म आदि विषय का वह ज्ञाता है । अपने विषय का ज्ञान देकर छात्र को उसमें निषणात बना देता है । इसीलिए गुरु को परब्रह्म कहा गया है । साथ ही आध्यात्मिक ज्ञान देकर परब्रह्म तक पहुंचा देता है । जैसे कि डॉक्टर को भगवान् का रूप भी कहते हैं क्योंकि ईश्वर जिस प्रकार मनुष्यमात्र का रक्षक है उसी प्रकार डॉक्टर रोगी को स्वस्थ कर देता है ।

मुक्तिमार्ग प्रशस्त करने वाले गुणों के आगार एतादृश गुरु को बारम्बार नमस्कार है । गुरु ही छात्र के सारे दोषों को दूर करता है, गुणों को धारण कराता है । इसके लिए कई बार ताड़ना भी करता है, परन्तु अन्दर से प्रेम का सहारा भी देता है-

कुम्भकारों गुरुः स्मृतः शिष्यों घटः प्रकीर्तितः । हरति दोषान् सर्वान् तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥

यहां पर एक बात ध्यान देने योग्य है । गुरु को कुम्हार और शिष्य को घड़ा कहा गया है । इसमें भी रुपक अलंकार है । गुरु को कुम्हार के सदृश कहा गया है । कुम्हार घड़ा बनाता है, गुरु शिष्य का निर्माण करता है । जैसे गुरु कुम्हार नहीं हो सकता वैसे ही वह ब्रह्मा, विष्णु, शिव और परब्रह्म भी नहीं हो सकता । केवल एकाध गुणों में सादृश्य हो सकता है ।

अतः अपमान-उपमेय में अभेदारोप होने पर भी भिन्नता तो बनी ही रहेगी । दोनों एक कभी नहीं हो सकते । यही बात ''गुरुर्ब्रह्मा ..... में भी समझनी चाहिए । गुरु और ब्रह्मा, विष्णु, शिव में कुछ ही गुणों की समानता जाननी चाहिए, सर्वांश में नहीं । जैसे कि गुरु-कुम्हार और शिष्य-घड़ा में आंशिक सादृश्य ही है, पूर्णरुपेण नहीं ।

आशा है पाठकगण मेरी बात से सहमत होंगे । अस्तु ।

జీవన కళ

త్రివేణి సంగము-ఆస్తికత యొక్క ప్రవాహము

-దేవరకొండ దత్తాత్రేయ

ఓమ్, ఈశావాస్యమిదం సర్వం యత్కించ జగత్యాం జగత్ । తెన త్వక్తెన భుంజీథా మాగృధ కస్యసిద్ధనమ్ ॥

మాన్యమాత్రుశక్తి ఉపస్థిత సతంగప్రేమి బంధువులారా !

మనమందరము అత్యంత సౌభాగ్యశాలు రము. మనము మన జన్మ జన్మాంతర సాధన మరియు పరమపిత పరమాత్ముని అసీమ కృప వలన మనకు ఈ దివ్యమానవ శరీరము లభించినది. మన ఈ అమూల్య మానవ జీవనము ఎట్లు సఫలమగును ? అందు కొరకు ప్రపథముగ మన జీవన ఉద్దేశ యాత్రను తెలుసుకొనవలెను.

భగవంతుడు ఈ మనమోహన సుందర సృష్టి నిర్మాణము చేసి అందులో అన్ని విధము లగు నవస్పతులను, ఔషదీ మొక్కలను, అన్నాది ధాన్య ఫలపుష్పములను మరియు పశు-పక్షులను, క్రిమ-కీటకాదులను రచిం చెను. అంతిమ రచనగా సృష్టికి ముకుటాయ మానమైన అత్యద్భుత నుందరశృంగార మనుష్య శరీరములను నిర్మించెను. మానవ నిర్మాణముతో పాటు వారి జీవనోద్దేశముల పరిచయము కొరకు ఈ సృష్టిలోని సమస్త పదార్థములను ఎట్లు ఉపయోగించుకొనవలె ననో తెలుపుచు, వారి జీవన లక్ష సిద్ధికొరకు జ్ఞాన, విజ్ఞాన వేద జ్ఞానమును ఉపదేశించెను. అయితే వేదము ఏదేని వూజా వఠన కొరకు గాని, ఫలపుష్పదులతో అలంకరించి, అన్నాది పదార్థములు నమర్పించి భక్తి శ్రద్ధలతో పూజించుటకు ఉద్దేశించిన గ్రంథము కాదు. వేదము చదువుకొనుట వలన బ్రహ్మజ్ఞానము కలుగును. వేదము మనకు జీవన కళను నేర్పును, జీవన విధానము నేర్పును, లోక కళ్యాణ మార్గమును ఉపదేశించును. చివరగా మోక్ష సాధనకు మార్గమును దర్శింపజేయును.

మనము జగత్తులో జన్మించినప్పుడు జగత్తు నవ్వినది, మనము ఏడ్చితిమి, మనము జగత్‌లో ఏదైన మంచి కార్యము చేసి నవ్వుచు వెళ్ళవలె అప్పుడు జగత్ ఏడ్చును. ఇది జీవనములో జివించే కళ అగును. శరీరము లోని రోమ రోమము తీవ్ర విషప్రభావముతో గాయములై విషము గ్రక్కు చుండెను. అంగాగ ములన్నియు పీడాగ్రస్తమై బాదించుచుండెను. కాని జీవన కళాచార్యుడు ఋషి రాజ్ దయా నందుని ముఖవర్చస్సులో ఒక అలౌకిక మందహాసము తాండవించుచుండెను. "హే నా ఈశ్వరా ! ఎంత గొప్ప లీల చేసితివి ! నీ కోరిక ఇదే కావచ్చును. నీ కోరిక పూర్ణమగు గాక ! అని చెప్పుచు దీర్ఘ నిశ్వాసతో పరమ పవిత్ర "ఓమ్" యొక్క ధ్వనిని చేయుచు జీవన లీలకు విరామ మిచ్చెను.

ఇచ్చుట ప్రభో ! నీ ఇచ్ఛాపూర్ణమగు గాక ! అనగా నీ వేదజ్ఞాన పాలన నా ధర్మము. వేదముల శిక్షణానుసారము సమస్త కర్తవ్య కర్మలను పూర్ణ సఫలతో నీ ఇచ్ఛానుసారము చేసితినని దీని భావము. సమర్పిత జీవనము యొక్క ఆదర్శమే జీవన కళ యగును.

ఈశావాస్య మిదం సర్వం యత్కించ జగత్యాం జగత్ । తె త్వక్తేన భుంజీథాః మా గృదః కస్య స్విద్ధనమ్ ॥

పవిత్ర యజుర్వేదములోని (40) దవ అధ్యాయము లోని మొదటి మంత్రము. ఇది జీవన కళ యొక్క తాళపు చెవి. ఇది విశ్వశాం తికి ఆధారమైనది. మంత్రము యొక్క మొదటి సూత్రము వైదిక త్రైతవాదము. మంత్రము చెప్పుచున్నది, (యత్కించ) ఏదైతె (జగత్యాం జగత్) ప్రపంచములో స్థిరమైయున్నదో (ఇదం సర్వం) అది యంతము (ఈశావాస్యము) ఈశ్వరునితో నిండి యున్నది. అనగా ఈశ్వ రుడు ఈ జగత్ నందలి సమస్త అణువణు వులో వ్యాప్తమై యున్నాడు. ఈశ్వరుడు సర్వ వ్యాపకుడు. ఒకటి వ్యాప్య జగత్, రెండవది దానిలో వ్యాపక పరమాత్మ. ఈ విధముగ రెండు నత్తాత్మక వదార్థముల అస్తిత్వము మంత్రాంశముతో తెలియుచున్నది. ఇప్పుడు మంత్రములోని ఉత్తరార్థములో (త్యక్తెనభుం జేథా) త్యాగ పూర్వక భోగానుభవము మరియు (మాగృదః కన్యసిద్ధనం) ఎవరి ధనము అశించకుండా మరియు ఈసమస్త ధనము పరమాత్మునిదని తెలుసుకొని దానిని ఉపయో గించుకొనమని ఆదేశించనైనది. ఈ ధనము ఎవరి కొరకు ? ఇది ప్రకృతి కొరకైతె అవసరము లేదు ఇది నిశ్చయముగా మూడవ అనాది చేతన సత్తా జీవాత్మ కొరకై యున్నది. ఈ విధమున మంత్రము మనకు ఈశ్వర-జీవ -ప్రకృతి యొక్క "త్రిక్" పరిచయము అగు చున్నది.

ఈ ప్రపంచమును శ్రద్ధగా పరిశీలించిన పుడు మనకు ఇందులో మూడు తత్వముల బోధ కలుగుచున్నది. 1) నేను, 2) నీవు, 3) అతడు (అనగా పరమాత్మ) ఈ మూడు శాశ్వత సత్తా కలిగిన తత్వములు. ఈ విశ్వ ములోని మూల తత్వములని గోచరమగు చున్నది. ఈ మూడింటి అస్తిత్వములో మనకు ధృడమైన విశ్వాసము ఉండవలెనని మంత్ర మువలన తెలియుచున్నది. అంతేకాదు ఈ మూడింటి పరస్పర సంబంధముల జ్ఞానము కూడ మనకు తెలియవలె. అప్పుడే జీవనము లో జీవించె కళరాగలదు.

మిత్రులారా ! మాతలారా ! ఒకానొకరు న్నారు వారి విచారము ఈ విధముగా నున్నది, ఏది కనబడుచున్నదో అదే సత్యము, ఏది కనబడకున్నదో అది అసత్యము కల్పితము. అనగా ఈ సంసారములోని భోగపదార్థములు, ఈ శరీరము, ఇంద్రియములు మరియు భవ నములు ఏవి కనబడుచున్నవో అవి అన్ని సత్యము. ఇది వారి యొక్క నినాదము. తిను-త్రాగు-వినోదించు (Eat, Drink and merry) రావణుడు సీతతో ఈ విధముగనే చెప్పెను "భుంక్ష్వ భోగాన్ పిబ రమస్వచ" ప్రపంచ పదార్థములను బాగా బాగా అనుభవించు, చచ్చిన తర్వాత ఏమగునో ఎవడు చూచెను ? వరలోకము పునర్జన్మములన్నియు మిథ్య. ఈశ్వరుడు కనబడదు, ఆత్మ అనేది ఏది లేదు, అది కనబడదు కావున ఇవన్నియు మిథ్య కల్పనలు. రెండవ వారు కొందరున్నారు, వారు అంటారూ, ఈ ప్రపంచములో ఏది కనబడుట లేదో అదే సత్యము. ప్రపంచము కనబడుచున్నది, మాతా, పితా, భాయీ, బంధువులు, ఇరుగు పొరుగు వారు, సమా జము, రాష్ట్రము ఇవన్ని కనబడుచున్నవి కాని ఇవన్ని మిథ్యయని చెప్పుచున్నారు. పరమా త్ముడు కనబడుట లేదు, కావున అది సత్యము. "బ్రహ్మ సత్యం-జగన్మిథ్యా-సర్వం ఖల్విదం బ్రహ్మనెహనా నాస్తి కించన" ఇవి వారి ప్రభోదవాక్యములు.

ఆశ్చర్యము కలిగించె ఈ అతి భౌతికవా దము-ఆశ్చర్యము కిలగించె అతి ఆత్మవా దము వలన లోకములో నిష్క్రియత నిరంత

రాయముగా పోషింపబడి వ్యాపించి దేశము, రాష్ట్రము-పరాధీనమై వేల సంవత్సరములు బానిసలుగా దరిద్రము అనుభవింప వలసి వచ్చినది.

విద్యాంచఽవిద్యాంచ యస్త ద్వేదో భయం సహ । అవిద్యాయా మృత్యుం తీర్త్వ విద్యా యాఽమృతమశ్నుతె ॥

భౌతికతా (అవిద్యా) మరియు ఆధ్యాత్మి కతా (విద్యా) ఈ రెండిటి సమన్వయ (సహ చర) యే జీవనము జీవించె నిజమైన కళ- భౌతిక ఉన్నతితో భౌతిక దుఃఖములు దూరమై ఆవశ్యక సుఖ సువిధములు లభించును. మరియు ఆద్యాత్మిక ఉన్నతితో అమృతత్వము -మోక్షము యొక్క శాంతి లభించును. లోక పరలోక ఈ సంబంధమే జీవనకళ వైశేషిక దర్శనాచార్యులు మహర్షి కణాద శబ్దములో **"యతోఽభ్యుదయనిః శ్రేయస సిద్ధి సధర్మః"** లోకము మరియు పరలోకముల సమన్వ యమే ధర్మ తత్వము ఇదే జీవన మార్గము ఈ విషయము ఇంక స్పష్టముగా అర్థమగు టకు ఒక దృష్టాంత కథ కలదు దానిని శ్రద్ధగా వినండి.

ఒక గ్రామములో ఒక గృడ్డివాడు మరియు ఒక కుంటి వాడు ఉండెవారు. ఒకసారి ఆ గ్రామము అగ్నితో తగులబడి పోవుచ్నుది. గ్రామములోని వారందరు ప్రాణ భయముతో పారిపోవు చుంటిరి. ఈ కుంటి వానికి, గుడ్డి వానికి సహాయము చేసే వారు ఎవరు లేక దుఃఖించు చుండిరి. అగ్ని జ్వాలలు సమీపము నకు చేరుచుండెను. వారికి ఈ దుర్ఘటన నుండి తప్పించుకొనుటకు ఏమి మార్గము కనబడలేదు. ఆ సమయములో ఒక బాటసారి వారి ఆవేదనను గ్రహించి, వారి వద్దకు వెళ్లి మీరు భయపడవద్దు ఇందుకు మీకు ఒక ఉపాయము నేను చెప్పెదనని చెప్పి ఓదార్చెను. సోదరులారా ! మీకు మరెవ్వరి సహాయము అవసరము లేదు, కండ్లు కనబడని గుడ్డి వానికి కాళ్లు బాగానే ఉన్నవి, కాళ్లు లేని వికలాంగునికి కండ్లు బాగానే ఉన్నవి, గుడ్డి వానిపై కుంటివాడు కూర్చొని మార్గదర్శనము చేసినచో ఉభయులకు లాభము కలుగునని బోధించెను. వారు ఆ విధముగనే సమన్వయ బుద్ధి భావముతో సంకటము నుండి తప్పించు కొనిరి.

మిత్రులారా ! ఈ అంధ-వికలాంగుల సమన్వయ న్యాయానుసారవే, కేవలము భౌతికవాదము గుడ్డిది. మరియు కేవలము అధ్యాత్మిక వాదము కుంటిది. ఈ రెండింటి సహచరముతో సమన్వయముతో మానవులు భౌతిక సుఖము, మరియు ఆధ్యాత్మిక శక్తి, శాంతిని పొందగలరు. కాని ఇచ్చట ఒక ముఖ్య విశేషమును గుర్తించు కొనవలసియు న్నది. అదేమనగా గుడ్డివాని భుజములపై కుంటివానిని కూర్చొనబెట్ట కుండ కుంటివాని భుజములపై గుడ్డివానిని కూర్చొన బెట్టినచో సంకటము మరింత పెరిగి వినాశనము సంభ వించును. అనగ భౌతికితా భుజముపై ఆధ్యా త్మికలూను ప్రతిష్టించవలెను. అంతేకాని ఆధ్యాత్మికతా భుజముపై భౌతికతను ప్రతిష్టించిన పురోగతి నష్ట బ్రష్టమగును ఎల్ల ప్పుడు ఆధ్యాత్మికతకు, భౌతిక సుఖముల కన్న అధిక ప్రాధాన్యత నీయవలెను. భౌతిక సుఖ ముల కొరకు ఎప్పుడు కూడఆత్మను అమ్ము కొనవద్దు. ఆత్మ పతనము చేసుకొన కూడదు. అన్నవస్త్రములు, గృహము మొదలగు భౌతిక వస్తువులు అవసరమే, మనము వాటిని సంపాదించుకొనవలెను. అందు కొరకు పూర్ణ పురషార్థము చేయవలెను. వాటిని సమన్వయ ముగా ఉపయోగించుకొని భౌతిక సుఖము అనుభవించ వలెను. కాని ఆత్మ పతన మూల్య ముపై కాదు, నైతిక ఆదర్శములను త్యజించి, ఆత్మహత్య చేసుకొనకూడదు. మన శరీరము మన ఆత్మ కొరకు ఉన్నది, ఆత్మ శరీరము కొరకు లేదు ఇది మరువవద్దు. భోజనము మన కొరకు ఉన్నది, భోజనము కొరకు మనము లేము. ఆత్మ యజమాని, బానిస కాదు. దానిని ఇంద్రియ రూప గుఱ్ఱములకు బానిసను చేయవద్దు, శరీర కష్టములను సహించి కూడా, భౌతిక సుఖ సాధనముల మూల్యమును చెల్లించి కూడా మనము మన ఆత్మిక జీవనము యొుక్క గౌరవమును మరియు నైతిక ఆదర్శములను రక్షించుకొన వలెను. ఇదే జీవన కళ !

మిత్రులారా ! మాతలారా ! ఏది దృష్య మానమగుచున్నదో అనగా కనబడుచున్నదో అది ప్రకృతి, ఇది కూడా శాశ్వత నత్యమైనది శ్రేష్ఠమైనది. ఏది కనబడ కున్నదో అనగా జీవాత్మ మరియు వరమాత్మకూడా నిత్య నత్య శాశ్వతమైనవి. ఈశ్వర-జీవ-మరియు ప్రకృతి ఇవి మూడు సత్య శాశ్వత అనాది సత్తా కలిగిన వదార్థములని వేద శాస్త్రముల వలన తెలియుచున్నది. మనము ఎటు వెళ్ళినను ఈ మూడింటి ప్రతీకలు దృష్యమానమగును, ఇవి లేకుండా ఏ ఆట కొనసాగదు.

మనము ఒక విద్యాలయమునకు వెళ్ళినా మనుకోండి అచ్చట ఉపాధ్యాయడు-విద్యార్థి-పాఠశాల భవనము దృష్యమానమగును. అచట ఉపాధ్యాయుడు మరియు విద్యార్థి వీరు ఇరువురు చేతనా సత్తా కలిగిన జ్ఞానవంతులు, విద్యాలయ భవనము అఇదలి సామాగ్రి భౌతికము. మనము ఒక వ్యాపార మండీకి వెళ్లినామనుకోండి ! అచ్చట ధాన్యపురాసులు కొనెవాడు మరియు అమ్మేవాడు దర్శనమి త్తురు. ఇచ్చట కూడా రెండు చేతన సత్తా కలిగిన బుద్ధి జీవులు కొనేవాడు-అమ్మేవాడు మరియు ధాన్యము దృష్యమానమగును. ఈ మూడింటిలో ఏ ఒక్కటి లేకున్నను వ్యాపా రము కొనసాగదు. విశ్వవ్యాపకమైన ఈ క్రీడలో కూడా ఈ మూడు పదార్థములు ఉన్నవి ఇవి లేకుండా క్రీడ కొనసాగదు. 1) "ఇదం సర్వం" ఈ బౌతిక విశ్వజగత్, 2) దానిని అనుభవించు జీవాత్మ, 3) "యః ప్రాణతో నిమిషతో మహిత్వైక ఇద రాజా జగతోబభూవ" ఈ రెండిటి అధిష్ఠాతా మహి మామయ పరమాత్మ.

రండి ! మనము వీటి అస్తిత్వ విషయ ములో మరికొంత తెలుసుకొందం ఈ జయ ప్రకృతిలో తయారైన శరీరము, ఇంద్రియ ములు మరియు ఇతర భౌతిక వదార్థములు మనకు ప్రత్యక్షమగుచున్నది. ఇవి మిథ్య ఎట్ల గును ? ఔను ఈ శరీరము ఇతర పదార్థ ములు భౌతికమైనవి. వరివర్తన శీలమై క్షణ భంఘురమైనవే కాని అసత్-మిథ్యా (False) ఎంత మాత్రము కాదు. ఈ శరీరము ద్వారా సంసార జనుల వెంట జరుపు కొనబడుచున్న వ్యవహా రములే, కర్మఫల రూపములో మన భావి జీవన భూమికను నిర్మాణము చేయును. అప్పుడు ఇవి అసత్య మెట్లగును ? మీలో ఎవరైనా భౌతిక విజ్ఞాన శాస్త్ర విద్యార్థి ఉన్నాడా ? ఉంటె వారికి తెలుసు (Matter is induetidle) అనగా పదార్థము అవినశ్వర మైనది. ఇది ఎప్పుడు నష్టము కాదు, లేకుండా పోదు. ఏ అణువు మరియు వరమాణువులతో ఏ వస్తువు తయారగునో అది రూపాంతరము చెంది మరల అణు పరమాణు రూపములో ఉండును ఇది నష్టమై లేకుండా పోదు. కావున తీ ప్రకృతి సత్ పదార్థము ఎప్పుడు శాశ్విత ముగా ఉండును.

2) మన జీవాత్మ తనంతట తాను మనకు కనబడదు కాని దాని ఉనికిని అందరు గమనించెదరు, అనుభవమును పొందెదరు. సాధారణముగ మనము చెప్పుకొందుము "నా శరీరము, నా తల, నా చేతులు, నాకాళ్లు, నా కన్నులు, నా చెవులు, నా మాట యని" దీని వలన తెలియుచున్నదేమనగా నేను వేరు నాకు సంబంధించిన అవయములు వేరని. "నేను" అని

చెప్పుకొనబడుచున్న పదార్థము ప్రత్యేకమైదని తెలియుచున్నది. ఈ నేను సత్తా కలిగిన పదార్థము శరీరములో వ్యాపించి సంపూర్ణ శరీరమునకు గతిని, చేతనమును కలిగించు చున్నది. ఇదే ఆ చేతన సత్తా ఇది జడ శరీరము నుండి వెడలి పోయిన తర్వాత శరీరము మరియు దాని అవయవముల న్నియు అచేతనములై నిరర్థక మగును. బాల్యా వస్థ-యువావస్థ-వృద్ధావస్థ వీటన్నిటి పరివ ర్తన శరీరమందే కలుగును. అనగా శరీరము నకే కలుగను. ఈ అవస్థలు ఆత్మకు కలుగవు, ఈ ఆత్మ అజర, అమర, అనాది, నిత్య చేతన శాశ్వత సత్తా కలిగిన పదార్థము. భగవద్గీతలో ఈ విధముగా చెప్పబడినది.

"న జాయాతె మ్రియతె వా కదాచన, నాయం భూత్వా భవితావాన్ భూయః । అజో నిత్యః శాశ్వతో యం పురాణోన హన్యతె హన్య మానె శరీర ॥"

"వాపాంసి జీర్ణాని యథా విహాయ సవాని గృహణాతి సరోపరాణి । తథా శరీరాణి విహాయ జీర్ణానవ్యాని సంయాతి సవాని దేహి ॥"

అనగా మనుష్యులు ఎట్లయితె పాత వస్త్ర మును త్యజించి క్రొత్త వస్త్రములను ధరిం తురో, అదే విధముగ ఆత్మ పాత శరీర రూప వస్త్రమును త్యజించి క్రొత్త శరీరమును పొందును. ఈ విధముగా ఆత్మసత్తాను గురించి కొంత తెలిసి కొనినాము.

3) జగత్ కర్త, పరమేశ్వరుడు ఈ కారణ ప్రకృతితో జగత్తును సృష్టించి అందులో తన అత్యద్భుత కళాకౌశముతో మానవ శరీరము లను నిర్మించి అందులో జీవాత్మలను ప్రతిష్టిం చెను. ఈ విధముగా మన జీవన జ్యోతిని వెలిగించిన జగత్ పితా పరమేశ్వరుని అస్తి త్వము మరియు మహత్వమును గూర్చి విచారించు కొందాము.

అన్తి సన్తిన జహాత్యన్తి సంతిం న పశ్యతి ।
దేవస్య పశ్య కావ్యం న మామర న జీర్యతి ॥

-అథర్వ (10-8-32)

ఆ ప్రియతమ ప్రభువే మన ఆత్మకు ఆదారం, మనము అతనిని విడిచి ఉండలేము అతనిని విడిచి ఉండవలెనను కొనినను అతడు మనలను ఒక్క క్షణము కూడా విడిచి పెట్టడు. మనము అతనిని మరిచి పోదామను కొనినను అతడు మనలను ఒక్క క్షణం కూడా మరచి యుండడు. అతడు మనంతట వ్యాపించి యున్నాడు. అతడు మనకు అత్యంత సన్నిహితముగానున్నాడు. అందువ లన అతడు మన కంటికి కనబడడు, ఎట్ల యితె కంటి సుర్మా కంటికి కనబడదో !

ప్రియ బంధువులారా ! అతనిని చూడవ లయు ననుకొనుచున్నారా రండి ! మీరు ఈ సృష్టియొక్క నిర్మాణమును దర్శించండి. ఈ అఖిల విశ్వ బ్రహ్మాండము అతని కావ్యము అనగా అతని గుణకర్మ కళా కౌశలము చూడ టమే, అతనిని చూడటము. అదే అతని సాక్షా త్కారము. కార్యమే కర్తకు సంకేతము. "ఈశా వాస్య మిదం సర్వం' అతడు సంపూర్ణ జడచేత నములో వ్యాపించి యున్నాయడు. అతడు విశ్వములోని అణు-అణువులో రమించుచు న్నాడు, ఎచ్చట లేదు అతని శోభ-కాంతి- సౌందర్యము ? దూరము వెళ్లనవసరము లేదు, కొంచెము మన శరీర రచనపై విచారిం తము. ఎవడు ఈ శరీరముపై చర్మరూప వస్త్ర మును ఆచ్ఛాదించెను, దీని ఆయువును ఎవడు నిర్ధారించెను. దీనిలో జీవనమును ఎవడు ఏర్పాటుచేసెను, దాని కొరకు బల మును ఎవడిచ్చెను. ఈ శరీరములో కార్యనిర్వ హణ కొరకు మనస్సును ఎవడు నిర్ధారణ చేసెను. ఆ మహాకవి కావ్యమును సదీర్ఘముగ విచారించు కొనవలెను. చివరగా "కళ" ఉన్నది కాబట్టి కళాకారుడు ఉండవలెను. బ్రహ్మాండ రచన ఉన్నది కావున రచయిత సునిశ్చితమైయున్నది. వ్యవస్థ ఉన్నచోట వ్యవస్థాపకుడు తప్పక ఉండును.

కొందరి మిత్రుల బావనమేమనగా, విభిన్న రూపములుగల పంచభూత పరమాణువులు పరస్పరము కలిసినపుడు ఈ సృష్టి ఏర్పడును దీనికి నిర్మాత అవసరమేమి లేదని వాదిం తురు.

ఒకానొక తండ్రి కొడుకుల మధ్య ఇటు వంటి విషయము పైననే మతభేదమేర్పడినది. తండ్రి నాస్తికుడు, కొడు ఆస్తికుడు ఒక రోజు గృహము నుండి తండ్రి బయటికి వెళ్లెను, కొడుకు తండ్రి గదిలో ఒక మేజుపై రంగుల డబ్బాను చూచి ఆరంగులతో గది గోడలపై వివిధ రూపముల చక్కని పుష్ప రూపాము లను చిత్రించెను, తండ్రి గదిలోనికి ప్రవే శించి చిత్రములను చూచి ఆశ్చర్యముతో ఈ చిత్రములను ఎవరు వేసినారని కొడుకును ప్రశ్నించెను. కొడుకు ఆ రంగుల డబ్బా వైపు చూచుచు న్నా గారూ ! ఈ టేబుల్ పైన ఉన్న రంగులే సహజముగా వివిధ రూపములో వెళ్ళి ఈ చిత్రములుగా మారినవి అని చెప్పెను. తండ్రి ఆగ్రహముతో నాకేమి పిచ్చి లేదు ఈ రంగులు వాటికవే వెళ్ళి ఈ చిత్రము లుగా ఎట్లు చిత్రింపబడును ? అనెను అప్పుడు కుమారుడు నాన్న గారు మీరు చెప్పు చున్నట్లు పంచభూతముల అణువులు సహజ ముగా వాటికవే కలిసి ప్రపంచము ఏర్పడ లేదా ? అట్లే ఈ రంగులు పరస్పరము కలిసి ఈ చిత్రముగా రూపొందుటలో ఆశ్చర్యమేము న్నది. అని ప్రశ్నించెను తండ్రికి తర్కబోద జ్ఞానము కలిగినది.

4) జడ పదార్థములు సహజముగా వాటి కవి మిశ్రము కావు, ఒక చేతన సత్తా తన బుద్ధి చతురతతో వస్తు నిర్మాణమునకు పదార్థ ములకు తగిన పాలల్లో కలిపి వసుత నిర్మా ణము చేయుదురు. అదే విధముగా ఈ ప్రపంచ సృష్టిని పరమేశ్వరుడు ప్రకృతి పదార్థములతో నిర్మించెను.

కొందరు మిత్రులకు సందేహము కలుగు తుంది, ఈశ్వరుడు ఉన్నట్లయితే మన కండ్లకు కనబడవలె కదా ? కనబడని దానిని నమ్మే దెట్లా ? వినండి, ఇద్దరు మిత్రులు ఉండిరి అందులో ఒకరు నా కంటికి ఏది కనబడు తుందో దానినే నేను నమ్ముతాను, కనబడని వాటిని గూర్చి నాకు నమ్మకము లేదు అను చుండెను. ఒకరోజు ఈ మిత్రునకు కడుపులో నొప్పి వచ్చినది అతడు తన రెండవ మిత్రు నితో మిత్రమా ! నేడు నా కడుపులో చాలా నొప్పిగా నున్నది, నేను పాఠశాలకు వెళ్ళలేను, భరింపరాని నొప్పి వస్తున్నదని బాధతో చెప్పెను రెండవ మిత్రుడు సహజముగా నవ్వుచు మిత్రమా ! నీవు పాఠశాలకు వెళ్లక పోతే వెళ్లకు కాని నాతో అబద్ధము ఎందుకు చెప్పుచున్నావు. నొప్పి ఉంటే ఏమిటి ? అది ఎట్లుంటుంది నాకు కనబడుట లేదుకదా నేను నమ్మేదెట్లా అని అనెను. నాకు భరింపరాని నొప్పి వస్తున్నది, నీకు వేళాకోలముగా నున్నదా ! నేను అనుభవించె నొప్పి నీ కంటికి ఎలా కనబడుతుంది అని చిరాకుగా సమాధా నము చెప్పెను. మిత్రమా ! నీకు ఇప్పుడు అర్థమయ్యే ఉంటుంది. లోకములో కంటికి కనబడని సత్తాత్మక తత్వములు చాలా ఉన్నవని.

మిత్రులారా ! రూపము కండ్లకు సంబంధించిన విషయము. రూపములను మనము కండ్లతోనే చూడగలము, శబ్దము చెవులకు సంబంధించిన విషయము. గంధము వాసన ముక్కుకు సంబంధించిన విషయము, రసము నాలుకకు సంబంధించిన విషయము, స్పర్శ జ్ఞానము చర్మమునకు సంబంధించిన విషయము. ఆయా విషయములు ఆయా ఇంద్రియములు గ్రహించును. ఒక దాని విషయమును మరొక ఇంద్రియము గ్రహింప జాలదు. పరమాత్మ తత్వము ఇంద్రియముల ఈ విషయము కాదు. ఇంద్రియము లేవియు పరమాత్మ తత్వమును గ్రహింప జాలవు. ఇది ఇంద్రియాతీతమైనది, అంతేకాదు మనస్సు-బుద్ధి అను అంతరేంద్రియములు గూడా పరమేశ్వరుని గ్రహింప జాలవు. ఆ పరమాత్మ కేవలము ఆత్మకు విషయము, ఆత్మ మాత్రమే పరమేశ్వరుని గ్రహించి అనుభూతి అనుభవమును పొందగలదు. నిర్మల నిరావరణ-అచంచల ఆత్మ యందు మాత్రమే పరమేశ్వ రుని సుభోదక అనుభవము కలుగును.

ఇచ్చట కొందరు మిత్రులకు మరొక సందేహము కలుగుచున్నది, అదేమనగా, ఈశ్వరుని అస్తిత్వమును అంగీకరించుచున్నాము, కాని అతనికి ఆకారరూపములో కాళ్ళు చేతులు ఇతర అవయవములు ఏవి లేవు గదా ? అతడుఈ ప్రపంచ పదార్థము లను ఎట్లు తయారు చేసినాడు ?

మిత్రులారా ! ఇచ్చట మనము ఒక విషయమును బాగా గుర్తుపెట్టు కొనవలెను. కాళ్లు-చేతులు మరియు ఇతర బాహ్య అవయవములన్నియు మన శరీరమునకు బయటి అవసరముల కొరకే పనికి వచ్చును, కాని శరీరము లోపలి పనులకు ఇవి ఏమి పని చేయవు. మనము ఒక పుస్తకమును ఎత్త వలసినపుడు ఆ చేతిని రెండవ చేతితో ఎత్తెదమా ? మనము మన తలను తిప్పవలె నన్నను, కండ్లు మూయవలెనన్నను, కన్నులు తెరువలెనన్నను, ముక్కుతో వాసన చూడవలె నన్నను, కాళ్లతో నడువ వలెనన్నను, మనస్సుతో సంకల్పము చేసి బుద్ధితో విచా రించి చేయుదుము. ఈ పనులన్నియు చేతులు లేకుండగానే చేయగలము, ఎందుక నగా మన శరీరములో వ్యాపించియున్న ఆత్మ తత్త్వము ఈ అవయవములలో గతిని కలిగిం చును. అది ఇవన్ని అవయవములలో వ్యాపిం చియున్నది. అదే విధముగా పరమపిత పరమేశ్వరుడు సంపూర్ణ సృష్టిలో వ్యాపించి యున్నాడు. కావున అతనికి సృష్టినిర్మాణము కొరకు ఈ బయటి అవయవముల అవసరము లేదు.

"ఈశావాస్య మిదం సర్వం" ఈ వేద మంత్రార్థము "ఈశ్వరుడు సర్వవ్యాపకుడు, సర్వశక్తి మంతుడు, సర్వజ్ఞుడని మరియు నిరాకారుడని ప్రతిపాదించుచున్నది.

మిత్రులారా ! సజ్జనులారా ! ప్రకృతి-జీవాత్మ-పరమాత్మ ఈ మూడు శాశ్వత సత్తా కలిగిన తత్త్వములు ఉన్నావని ఇంతవరకు మనము తెలుసుకొనినాము. ఈ మూడు లేకుండా లోకములో ఏ కార్యము జరుగదు అయితే ఈ మూడింటిలో అంతరమేమున్నది? ఈ మూడు పరస్పరము ఏ విధముగా సంబంధము కలిగి యున్నవి ? వాటి ఉపయోగమేమి తెలిసి కొనవలెయును.

ఈ మూడు కూడా సత్తా కలిగిన సత్ పదార్థములు. ఈ మూడింటిలో ప్రకృతి విశేషమేమనగా, ఇది సత్ పదార్థము, ఇది యెల్ల ప్పుడు ఉండునది. జీవాత్మలో విశేషమేమున్న దనగా ఇది సత్ పదార్థముతో పాటుచిత్ కూడా కలిగి యున్నది. జీవాత్మ సత్+చిత్‌గా నున్నది. ఇందు చైతన్యత - ఇచ్ఛా - ద్వేషం - జ్ఞానము-ప్రయత్నము-సుఖము-దుఃఖము యొక్క అనుభూతి అనుభవ విశేషత కలదు. పరమాత్మలో జీవాత్మ కన్న మరొక విశేషత ఆనందము ఉన్నది. అనగా పరమేశ్వరుడు సత్+చిత్+ఆనందస్వరూపుడని తెలియు చున్నది.

ఓం ఉద్వయంతమ సస్పరిస్వః పశ్యంత ఉత్తరం । దేవం దేవత్రా సూర్యమగన్మ జ్యోతి రుత్త మమ్ ॥ -యజు 33-54

వైదిక సంధ్య ఉపస్థాన మంత్రములలో ఈ ప్రథమ మంత్రము ఈశ్వర-జీవాత్మ మరియు ప్రకృతి ఈ మూడింటి అంతరము లను చాలా సుందరముగా వర్ణించబడినది. మంత్రములో మూడు శబ్దములున్నవి. 1) సత్, 2) ఉత్తరం, 3) ఉత్తమం అనగా ప్రకృతి సత్-జీవాత్మ-ఉత్తరం-మరియు పరమాత్మ ఉత్తమమ్‌గా శ్రేష్టత కలిగి యున్నవి. ప్రకృతి (Good) జీవాత్మ (Better) పరమాత్మ (Best).

ఔను ప్రకృతి కూడా శ్రేష్టమైనది. ఇది చెడ్డది నికృష్టమైనది కాదు విడువదగినది కాదు. కొందరు అనుకొనుచున్నట్లు ఈ ప్రకృతి మాయులేక మోసము కాదు. ప్రకృతి మాతవంటిది.

దీనిని ఈ విధముగా నిందించుట సరియైనది కాదు. పరమేశ్వరుడు ప్రకృతి పరమాణువులతో అత్యంత మనోహరమైన సృష్టిని రచించి జీవాత్మలకు అన్నాది ఆహార పదార్థ ములతో తృప్తి కలిగించు చున్నాడు. జీవాత్మ ప్రకృతి కన్న శ్రేష్టమైనదే కాని జీవాత్మ ప్రకృతి ద్వారానే పరమాత్మను పొందగలదు. అన్య మార్గము మరేదియు లేదు. పరమాత్మ జీవాత్మ కన్న అత్యంత శ్రేష్టమైనది. పరమేశ్వరునిలో ఆనంద గుణము విశేషముగా నున్నది. జీవాత్మలో ఆనందము తక్కువగా నున్నది. కావున జీవాత్మ పరమాత్మను ఆశ్రయించి అతనిలోని ఆనందమును అనుభవించుటకు నిరంతరము ప్రయత్నించవలెను. జీవాత్మకు ఆనందము మరియు శాంతి అవసరము. ఈ గుణములు ఈశ్వరుని యందే ఉన్నవి.

మిత్రులారా ! మాతలారా ! ఈశ్వరుడు ఎచ్చటో ఒకచోట విశేషస్థాన మందు కలడని భావించు కొనుచున్నారు. కొందరు నాల్గవ ఆకాశముపైన, మరికొందరు ఏడవ ఆకాశ ముపైన మరికొందరు క్షీరసాగరమందు శయనించుచున్నాడని చెప్పుచున్నారు, కొందరు నిరాకారుడు-న్యాయకారియైన ఆ పరమేశ్వరునికి వివిధ రూపములను కల్పించి నానా విధ రూపములలో చిత్ర విచిత్రముగా మూర్తు లను తయారు చేసి, వస్త్రములతో అలంక రించి, బంగారు కిరీటములను, వజ్ర వైఢూర్య ఆభరణములను ధరింప జేసి ఆరాధన సమారాధన భోగ ప్రసాదములతో ఒక సజీవ మానవునికి వలె తినిపించి త్రాగించుటకు ప్రయత్నము చేయుచున్నారు. అచేతన విగ్రహము నకు ముందు చేతులు జోడించి వివిధ కోరిక లను తీర్చుమని ప్రార్థించుచున్నారు. అంతే కాదు మా కోరికలు నెరవేర్చినచో మీకు బహు మతులు ఇవ్వగలమని ఆశ చూపించుచు న్నారు. ఆహా ! బుద్ధి జీవులకు ఎంతటి అజ్ఞా నము ఆవరించినది !

ఈశ్వరుడు సచ్చిదానంద స్వరూపుడు, నిరాకారుడు, సర్వశక్తిమంతుడు, దయాళువు, అజన్మ, నిర్వికారుడు, అనాది, అనుపమ సర్వాధారుడు, అమరుడు, అభయుడు, నిత్యుడు, పవిత్రుడు మరియు సృష్టికర్త ఈశ్వ రుడు ఒక్కడే-జీవాత్మలు అనేకములు ఈశ్వ రుడు సర్వజ్ఞుడు, జీవాత్మ అల్పజ్ఞుడు. ఈశ్వ రుడు విభుడు, జీవాత్మ అను. ఈ విధముగా ఈశ్వర జీవాత్మలలో నర-నారాయణ భేద మున్నది.

ఓ నా ఆత్మ స్వరూపులారా ! నీవు నీ ఆత్మ

గౌరవాన్ని తెలుసుకో ! పరమాత్ముడు నీ బంధువు "సనోబంధుర్జనితా" మరియు నీ సఖుడు "సయూజా సఖాయపి" ఘనిష్ఠ మిత్రుడు నీవు ఈ సఖుని ఆదర్శముగా యెంచుకొని ప్రకృతి ఫలములను కర్మానుసారము అనుభవింపుము, కాని వాటి యందు ఆసక్తి-మమకారము పెంచుకొనవద్దు. "త్యక్తైన భుంజీథా" అతని వలన ప్రదత్తమైన భోగములను త్యాగపూర్వకముగా అనుభవించు. "సంయమఃఖలు జీవనం" సంయమమే జీవనము మరియు అది జీవన కళ.

జీవాత్మ ఒక యాత్రికుడు. అతని యాత్ర యొక్క లక్ష్యము ఆనందస్రోత శాంతిధామ పరమాత్ముని ప్రాప్తి. కాని ఈ యాత్ర కొరకు సాధనములు కావలెనుగదా ! ఈ శరీరము ఈ ఇంద్రియములు, ఈ ధనము, ఈ వైభవము, ఈ సంపూర్ణ ప్రకృతి, ప్రకృతి జన్య పదార్థములన్నియు జీవాత్మ యాత్రకు సాధనములు కఠోపనిషత్ ఋషి ఈ విధముగా చెప్పెను.

ఆత్మానం రథినంబిద్ధి శరీరం రథమేవతు ।
బుద్ధింతుసారథిం బుద్ధిమనః ప్రగ్రహమే వచం ॥
ఇంద్రియాని హయనాహు ర్విషయాంస్తుషే గోచరాన్ । ఆత్మేంద్రియ మనోయుక్తం భోక్తేత్యా హుర్మనీషిణః ॥

ఈ శరీరము ఇంద్రియములు బుద్ధి-మనస్సు ఇవన్నియు సాధనములు రథీకుడైన ఆత్మ ప్రియతమ ప్రభువును చేరుట లక్ష్యమైయున్నది. మన ఈ శరీరము దైవదత్తమైన నావ-నౌక ఈ భవసాగరమును దాటి భగవంతుని వొడిలో చేరుటకు దివ్యసాధనము. అదే విధముగ మన పరివారము, మన సమాజము- మన రాష్ట్రము ప్రభువుకు ప్రియమైన ఈ సంపూర్ణ విశ్వబ్రహ్మాండము మన యాత్ర లక్ష్యము చేరుటకు అత్యధిక సాధనులు. ఈ యాత్రలో విభిన్నములైన మజిలీలున్నవి. విశ్రాంతి స్థలములున్నవి. యాత్రికుడైన జీవాత్మకు నూతన శక్తిని ప్రధానము చేయు ఈ సంసారిక కర్తవ్య కర్మలు జీవాత్మకు బంధనములు రాకూడదు, ఇవి బంధనములు ఎప్పుడు కాగలవనగా, యెప్పుడైతె జీవుడు తన సాధనములనే సాధ్యమనే భావన కలిగి యుండునో అప్పుడు అవి బంధనములు అగును. నదిని దాటి వొడ్డునకు చేరుటకు నావ సాధనము, కాని మనము నావ యొక్క అందమునకు లోబడి అందులో కూర్చొని దానియందు ఆసక్తి పెంచుకొనినచో ఆ నావ మనలను నది దాటించ లేదు. అప్పుడు ఆ నావయే మన పురోగమనమునకు నిబంధనము కాగలదు. మనము లక్ష్యము చేరుకొనలేము. ఈ దోషము ప్రపంచ పదార్థములదికాదు, ఈ పదార్థములు మన ఉపయోగము కొరకు లభించినవి. సాధన రూపములో ఉపయోగించు కొనుటకు ఇవి లభించినవి. వాటిని మనము ఉపయోగించు కొనవలెను. కాని ఇచ్చట మనము వేదమాత యొక్క సందేశమును మరువవద్దు.

"త్యక్తైన భుంజీథా" త్యాగపూర్వకముగా అనుభవించవలెను. నావ మనకు లభించినది ఉపయోగించుకొని విడిచి పెట్టుట కొరకు అనగా ప్రపంచ పదార్థములను అనుభవించు, కాని దానియందు లగ్నమై అదే సాధ్యముగా భావించకూడదు. దానిని పరిమిత సీమలో అనుభవించి త్యాగ భావముతో విసర్జించవలె ఈ త్యాగము మరియు భోగముల సమన్వయమే జీవనము యొక్క జీవించె కళ. మన భోగమే యోగరూపాము కావలెను, యజ్ఞమయము కావలెను. ఈ తత్త్వ జ్ఞానమును మనకు వేదమాతయే తెలుపుచున్నది. వేద మాత తన అమృత పుత్రుడైన మానవునకు జీవన కళను నేర్పుచు ఉపదేశించినది. "మాగృధః కస్యసిద్దనం" ఓ నా ప్రియమైన పుత్రా ! నీవు లోభివి కావద్దు, సంయమును విడువవద్దు, ఎవరి అధికారమును బలవంత ముగా లాగు కొనవద్దు. మరొకమాట బాగా గుర్తుంచుకొనుము, నీ వద్ద ఏదైదె ఉన్నదో "విద్యా-బలము-ఐశ్వర్యము" ఇవన్నియు నీవి కావు. "కస్యసిద్దనం" ఇవి యన్నియు సుఖ స్వరూపుడైన పరమేశ్వరునివి. కావున అతని వస్తువులను, అతని చరణముల యందు అర్పించుచు ఒక విధమైన అలౌకిక ఆనంద మును అనుభవింపుము. "ఇదన్నమమ" ఇది నాది కాదు, ఇది నా ప్రభువుది, ఇటువంటి భావనయే యజ్ఞమయ భావన "అయం యజ్ఞో విశ్వస్య నాభిః" ఈ యజ్ఞ భావనయే విశ్వ చక్రము యొక్క నాభి, ఈ యజ్ఞమయ జీవనమే జీవన కళా రహస్యము. ఈ యజ్ఞ జీవనమును మన నిజ జీవితములో ప్రతిష్ఠించు కొనవలెను. జీవన కళను మనము మన పరివారిక, సామాజిక, రాష్ట్రీయ మరియు విశ్వ జీవనములో ఉపయోగించు కొనవలెను. దాని వలన శ్రేష్ఠ ప్రకృతి సాధ ములు శ్రేష్ఠతర జీవాత్మకు గౌరవమును ప్రసాదించును.

...पृ. ६ का शेष.

जाने पर थोड़ा अनुमान कर सका कि सम्भवतः दूसरे स्थानों में भी गिरफ्तारियां हुई होंगी । गिरफ्तारियों के समाचार सुनकर शहर के सभी मित्र भयभीत हो गए । किसी से इतना भी न हो सका कि जेल में हम लोगों के पास समाचार भेजने का प्रवन्ध कर देता ।

जेलः जेल पहुंचते ही खुफिया पुलिस वालों ने प्रवन्ध कराया कि हम सब एक दूसरे से अगल रखे जाएं किन्तु फिर भी एक दूसरे से बातचीत हो जाती थी । १६ दिसम्बर १९२७ के दिन श्री राजेन्द्रनाथ लाहिडी को गोण्डा जेल में फांसी दी गई है और १९ दिसम्बर १९२७ को रामप्रसाद विस्मिल, अशफाकउल्ला खां और रोशन सिंह ठाकूर को फांसी दी गई ।

श्री रामप्रसाद विस्मिल ने फांसी से पहले अंतिम संदेश इस देश वासियों के नाम और विशेषकर युवकों के नाम दिया । वह कहते है जव तक उन्हें कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य का ज्ञान न हो जाए तब तक वे भूलकर भी किसी प्रकार के क्रांतिकारी षड़यन्त्रों में भाग न लें । यदि देश सेवा की इच्छा हो तो खुले आंदोलनों द्वारा यथाशक्ति कार्य करें, अन्यथा उनका बलिदान उपयोगी न रहेगा । दूसरे प्रकार से अधिक देश सेवा हो सकती है और ज्यादा उपयोगि सिद्ध होगी । परिस्थिति अनुकूल न होने से ऐसे आंदोलनों में परिश्रम प्रायः व्यर्थ जाता है । जिनकी भलाई के लिए करो, वहीं बुरे-बुरे नाम धरते है और अंत में मन ही मन कुढ-कुढ कर प्राण त्यागने पढ़ते हैं ।

देश वासियों से यहीं अंतिम विनय है कि जो कुछ करें सब मिलकर करें और सव देश की भलाई के लिए करें । इसी से सबका भला होगा ।

मरते ''बिस्मिल' 'रोशन' 'लहरी'
'अशफ़ाक' अत्याचार से ।
होंगे पैदा सैकड़ों इनके रुधिर की धार से ॥

-रामप्रसाद विस्मिल

ముత్యువు యొక్క వాస్తవిక స్వరూపము

-దేవరకొండ దత్తాత్రేయ

వాయురనిల మమృత యథేదం భస్మాం తం శరీరం । ఓం క్రతో స్మర క్లిబె స్మర కృతం స్మర ॥

-యజుర్వేదం 40-15

దేవీ దేవతలారా ! ఈ వైదిక "శాంతి కథ" క్రమములో మృత్యువు యొక్క వాస్తవిక స్వరూపముపై విచారించుటకు మనము పవిత్రమైన యజుర్వేద మండలి నలుబదవ అధ్యాయములోని 15వ మంత్రము ప్రథమ చరణముపై ముఖ్యముగా విచారించుచున్నాము. అమృతమయి వేదమాత విధముగ ఉపదేశించుచున్నది. ఈ జీవనము రెండు పదార్థముల యొక్క సంయోగ పరిణామము. ఇందులో ఒకటి (వాయు) శక్తి. శాలీ వత్మ. ఇది "అనిలం" అపార్థివ, అభౌతికం "అమృతం" అమరమైన శాశ్వితమైనదైయున్నది. (అధ) మరియు రెండవది (ఇదం శరీరం) ఈ శరీరము (భస్మాంతం). దీనికి అంతము భస్మమగుట. బూడిద యగుట. అయితే మరణ ధర్మ శరీరము మరియు అమరమైన ఆత్మ-వీని సంయోగ మునకు నామము జీవనము లేక జన్మ. ఈ రెండింటి వియోగమునకు పేరు మృత్యువు లేక మరణము. వేదసందేశమును మనము మరికొంత విస్తారముగా విచారించు కొందాము.

భద్ర పురుషులారా ! మాతలారా ! మనుష్యుడు ప్రపంచ పదార్థముల యెడ అనురక్తుడై మమకారముతో, అవి దూరమైనపుడు దుఃఖము పొందును. ఈ మమకార వశమునకు పేరు "నికృష్ట స్వార్థము". ఈ స్వార్థ నికృష్టి వ్యక్తి యొక్క ధనము-సంపద, బంధు పరివారము మృత్యువువలన దూరమగుచున్నది. ఈ విధముగా పోగొట్టుకున్న పదార్థములను తిరిగి పొందుటకు వృధా యత్నించును, దుఃఖించును. ఈ విషయము పితా పుత్రుల సంబంధమునకు గల వాస్తవిక జ్ఞానము కలుగుట వలన స్పష్టముగా తెలియును. పితా, పుత్రులు- బంధువుల యొక్క వాస్తవిక సంబంధమేమి ? ఈ విషయము తెలియుట కొరకు మొదట సంబంధము యొక్క సత్తాను గురించి తెలిసికొనవలసి యుండును. ఏమి ? ఈ పితాపుత్రుల యొక్క సంబంధము ఈ రెండు జీవాత్మలలో ఉన్నదా ? సమాధానము లేదని వచ్చును. ఎందుకనగా పితా పుత్రుల యొక్క సంబంధమునకు ఆయువు యొక్క భేదము అనివార్యమగును. ఎందుకనగా, ఆత్మలన్నియు ఏక సదృశ నిత్యమైనవి. వీనికి ఆదిగానీ, అంతము గానీ లేదు. ఈ ఆత్మలు ఆయుభేద ముతో సంబంధము కలిగి పితా పుత్రాదుల వలె సంబంధ బాంధవ్యము కలిగి లేవు. ఇకపోతే; ఇవి పరస్పర శరీరములతో సంబంధము కలిగియున్నవా ? లేవు. అటువంటి సంబంధము కూడా ఏమీ లేదు. ఎందుకనగా మరణించిన తర్వాత కూడ శరీరము మగిలి ఉంటున్నది. కాని ఆ మృత శరీరమును తన పితా పుత్రులని భావించుకొని దానిని ఇంటిలో ఉంచుకొనరు. శరీరము నుండి జీవాత్మ వెళ్లిపోయిన తర్వాత, శరీరము "శవము"గా గుర్తింపు పొందుచున్నది. అప్పుడు ఈ శవరూప శరీరమును దహనము చేయుటకు ప్రయత్నము జరుగుచున్నది. ఒకవేళ ఈ శరీ రమే పితా పుత్రులగు యెడల దానిని దహనము చేయుట పాపకార్యమగును. కాని, ఇచ్చట ఆ సంబంధము లేకుండ దహనము చేయుట పుణ్యకార్యముగా భావింపబడుచున్నది. కావున రెండు ఆత్మలకు గానీ రెండు శరీరములకు గానీ, పితా పుత్రాదుల యొక్క సంబంధ బాంధవ్యము ఏమి లేదని స్పష్టమగుచున్నది. ఇది కేవలము ఆత్మ మరియు శరీరముల యొక్క కలయిక వలన కలిగిన సంబంధము. ఈ కలయిక వలన కలిగినది పితా పుత్రాదుల సంబంధము. ఇది మృత్యువుతో విడిపోయినప్పుడు పితా పుత్రాదుల సంబంధము విడిపోవును.

ఒక గృహస్తుని ఇంటిలో ఒక శిశువు జన్మించినది. ఈ జన్మించుటకు అర్థము ఏమి ? శరీరము మరియు ఆత్మయొక్క సంయోగము. ఈ సంయుక్త ద్రవ్యమునకు పేరు జన్మిం చుట. ఈ జన్మించుటతో శిశువునకు లౌకిక పితా పుత్రాది బంధువుల సంబంధము విడి పోవుచున్నది. ఈ విధముగా మృత్యువు వలన శరీరము మరియు ఆత్మ యొక్క కలయిక విడిపోవుచున్నది. ఇది అనివార్య పరిణామము. కావున దుఃఖించుట అవివేకము.

మరణించిన వారి పరివారము ఆలోచించి తెలిసికొనవలసిన దేమనగా, "కస్య సిద్ధనం". ఒక వస్తువు ఈశ్వరునిదై యుండెను. దానిని అతడు యెప్పుడైనా తీసికొని వెళ్లును. ఈ విధముగా అతని వస్తువులను అతడు తీసికొని వెళ్లగలడు. ఈ విధముగా అతని వస్తువులను అతడు తీసికొని వెళ్లుట వలన దుఃఖమెందు లకు ? చివరగా మృత్యువంటె ఏమిటి ?

ఈ విషయములో అనేక విధమైన మాటలు, అనేక సాంప్రదాయకులలో ప్రచలితమై యున్నవి. కానిజీవనము మరియు మృత్యువు యొక్క వాస్తవిక రూపము ఏమనగా, అనేక నాడీ మండలములతో నిర్మింపబడిన ఈ శరీరము మరియు జీవాత్మ సంయోగమునకు పేరు "జన్మము". దాని వియోగమునకు పేరు "మృత్యువు". ఇచ్చట మృత్యువు విషయములో మరికొంత విశ్లేషణ అవసరమై యున్నది. మొదట మృత్యువు దుఃఖ ప్రదముకాదు. అది సుఖప్రదము. మృత్యువు ఏ విధముగా సుఖప్రదము ? ఈ సిద్ధాంతము కొని పరిణామములకు సంకేతమగుచున్నది. అదేమనగా మృత్యువు "దివా, రాత్రుల" సదృ శ్యమని చెప్పబడుచున్నది.

ఏ విధముగానైతే దినము మరియు రాత్రి, పని మరియు విశ్రాంతి కొరకు ఉన్నదో, అదే విధముగా, జీవనరూప దినము మరియు మృత్యురూప రాత్రి విశ్రాంతిగా పనిచేయుచున్నది. ఈ పని బాల్యావస్థ నుండి ప్రారంభమై యౌవనావస్థలో ఉన్నత శిఖరమునకు వెళ్లును. తర్వాత వృద్ధావస్థ, జీవనము యొక్క అంతిమవేళ యగును. మనుష్యుడు దినమంతా పనిచేసి సాయంత్రము వరకు అలసి పోవును. ఇంకా యెక్కువ పనిచేయుటకు యోగ్యత. కలిగి యుండదు. రాత్రివేళ

విశ్రాంతి పొంది తెల్లవారి ప్రాతఃకాలమందు క్రొత్త ఉత్సాహము, కొత్త సామర్థ్యము, కొత్త స్ఫూర్తితో నిదురలేచును. అదేవిధముగా మనుష్యుడు జీవనము యొక్క అంతిమవేళ వృద్ధావస్థలో పనిచేయుటకు అయోగ్యుడగును. బుద్ధి పనిచేయదు. జ్ఞాపకశక్తి క్షీణించును. శరీరము నందలి ఇంద్రియము లన్నియు నిర్వీర్యమై పని చేయుటకు నిరాకరిం చును. జీవనము దుఃఖమయమగును. దయామయుడైన పరమేశ్వ రుడు ఈ దుఃఖ మయ జీవనమును తొలగించి మృత్యురూప విశ్రాంతిని కలుగజేయును. ఈ విధముగ మృత్యురూప రాత్రిలో జీవుడు విశ్రాంతి పొంది జీవనరూప ప్రాతఃకాల మందు నూతన ఉత్సాహము పొందును. తాత్పర్యమేమనగా, మృత్యురూప రాత్రి యొక్క విశ్రాంతి వృద్ధావస్థలోని అకర్మణ్యతను తొల గించి ఈ అపూర్వ-కర్మణ్యతలోనికి మార్చి వేసినది. ఈ పరిణామము వలన మనకు తెలియబడుచున్నదేమనగా, మృత్యువు దుఃఖ ప్రథము కాదు. అందుకు భిన్నముగా విశ్రాంతి మరియు సుఖాన్ని, నూతనశక్తిని ఇచ్చుచున్నదని గ్రహించవలెను. భగవాన్ శ్రీకృష్ణుడు భగవద్గీతలో ఈ విషయమునే ప్రస్తావించెను.

"వాసాంసి జీర్ణాని యథా విహాయ, నవాని గృహ్ణాతిన రోపరాణీ। తథా శరీరాణి విహాయ జీర్ణాన్యయాని సంయాతి నవాని దేహీ ॥

ఏ విధముగానైతే మనుష్యుడు జీర్ణమైన చినిగిపోయిన వస్త్రములను విడిచి క్రొత్త వస్త్రములను గ్రహించుచున్నాడో, అదే విధముగా, ఆత్మ జీర్ణమైన శరీరమును విడిచి క్రొత్త శరీరమును గ్రహించుచున్నది.

భళా! ఎవరుకూడ చూచి విని యుండరు. పాత వస్త్రములను విడిచి క్రొత్త వస్త్రములను ధరించుటకు ఎవరికైనా, దుఃఖము, క్లేశము కలుగగలదా ? అందుకు భిన్నముగ మనము చూచుచున్నాము, వినుచున్నాము. కొత్త వస్త్రములు ధరించుటకు అందరు సంతోషించగలరు. అయితే ఇచ్చట ఆత్మకు శక్తిహీనమైన శరీరమును విడిచి కొత్త శరీరమును పొందుటకు కష్టము, దుఃఖము, క్లేషము ఎందుకు కలుగుచున్నది ? వాస్తవముగా అట్లు కలుగుటకు ముఖ్య కారణము అజ్ఞానము. ఈ పరిణామ సిద్ధాంతము వలన తెలియబడుచున్నదేమనగా, మృత్యువు దుఃఖప్రదము కాదు. సరికదా సుఖప్రద పరిణామమని గ్రహించుట ఉచితము.

దేవ దేవతలారా ! భద్రపురుషులారా ! మరణించు వ్యక్తి ఈ (కాయము) శరీరము మృత్యువుచే లాగివేయబడుచున్నదని అజ్ఞాన వశీభూతుడై, దుఃఖమును క్లేశమును అనుభవించుచున్నాడు. దానికి బదులుగా ఒక నూతన సుందరమైన శరీరము లభించుచున్నదని గ్రహించలేకపోవుచున్నాడు. అదే విధముగా అతని అపశిష్ట పరివార బంధుజనుల దుఃఖమునకు కారణము అజ్ఞానమే !

మహాకవి రవీంద్రనాథ్ ఠాగూర్ తన అమర గ్రంథము "గీతాంజలి"లోని ఒక గీతములో ఈ విధముగా ప్రస్తావించిరి. కరుణామయి మాత తన శిశువునకు అమృతమయ పాలను తన రామ పక్ష స్థన్యము నుండి ఇచ్చుచు, అనివార్య కారణముచే బాలుని ఆ స్థన్యము నుండి తొలగించును. అప్పుడు అబోధ అజ్ఞాన బాలకుడు ఏడుపునకు లంఘిం చును. కాని మాత ఉత్తర క్షణములోనే బాలునకు తన కుడి స్థన్యమును అందించి వానిని శాంతపరచును. అదే విధముగా వాత్స ల్యమయి విశ్వధాత్రి మాత ఈ కార్యమునే చేయుచున్నది. మనము కూడ బాలకునివలె ఒక జీవనరూప స్థన్యము నుండి వేరు చేయ బడినపుడు ఏడ్చుచు పెడబొబ్బలు పెట్టుదుము. అజ్ఞాన బాలకునకు తెలియదు, ఈ స్థన్య మును కరుణామయి మాత ఎందుకు మార్చి నదో ! కాని మాతకు తెలుసు ఈ స్థన్యము లోని పాలు నిండుకున్నవని. బాలునకు పాలు ఇవ్వకూడదను ఉద్దేశము ఆ తల్లికి ఎంత మాత్రము లేదు. అమృతమయ సమృద్ధమైన పాల భండాగారము తన రెండవ స్థన్యములో నిక్షిప్తమైయున్నది. అది అందించుట కొరకే మొదటి స్థన్యము నుండి బాలుని విడిపించుట అనివార్యమగుచున్నది.

ఇచ్చట మీరు నన్ను ప్రశ్నింపవచ్చును; మీరు చెప్పే ఉపదేశములు చాలా బాగానే ఉన్నవి. అనుసరనీయములే కావచ్చును. కాని మేము క్రియాత్మక ప్రపంచమును చూచినపుడు ఈ మాట సంపూర్ణముగా, విపరీతముగ గోచరింప బడుచున్నది. ఒక కుష్టురోగి జైలులో బందీగానున్నాడు. స్వేచ్ఛ లేదు. అచ్చట అతనికి ఏ విధమైన సుఖము లేదు. జీవనము క్లేశము మరియు దుఃఖభరితమై యున్నది. అతడు మరణించినట్లయితే, అతని నుండి ఈ శారీరిక కష్టములన్నీ తొలగిపోగలవు. అందుకొరకు అతనితో ఎవరైనా "ఈ కష్టములన్నీ తొలగిపోవుటకు నీవు మరణించవలెనని అనుకొనుచున్నావా ?" యని ప్రశ్నించిన, అతడు ఆ మరణవార్త విని భయకంపితుడగును. అనగా మృత్యువు అతనిని భయకంపితుని చేయుచున్నది. ఇది సత్యమే కదా !

సజ్జనులారా ! ఈ మాట విచారణీయముగనే యున్నది. ఇది సత్యమే ! క్రియాత్మక సంసారములో మృత్యువు దుఃఖప్రథముగా గోచరింపబడుచున్నది. కాని ఇచ్చట మనము విచారించవలసిన విషయమొకటున్నది. చూడండి ! మృత్యు సమయములో కలుగు దుఃఖమునకు కారణము మృత్యు భయము. ఇచ్చట మీకు ఒక విచారణీయ విషయము ప్రస్తుతింపబడుచున్నది. ఈ విషయముపై గతములో కూడా కొంత విచారింపబడినది.

ప్రపంచమందలి ప్రతి పదార్థము సృష్టికర్తయైన ఈశ్వరునిదైయున్నది. పదార్థములన్నియు మనుష్యులకు ఉపయోగార్థమివ్వబడినవి. మనుష్యుడు, ఈ ప్రపంచ పదార్థములన్నింటికి ప్రయోగకర్తయే కాని స్వామి కాదు. ఈ విషయము ఇంతకు పూర్వమే శాస్త్రీయ ముగా నిరూపింపబడినది. మనుష్యుడు తన స్వార్థబుద్ధితో ప్రపంచ పదార్థముల యెడ, మమకారము, రాగము, అనురక్తి పెంచుకొని ఈపదార్థములన్నియు "నావి" "వీటన్నిటికి నేను స్వామిని" యని ఎప్పటి నుండి అనుకొనుచున్నాడో, అప్పటి నుండి అతనికి కష్టములు-దుఃఖములు కలుగుచున్నవి. ఇవి ఎందుకు కలుగువలెనని ప్రశ్నింపవచ్చు. అయితే మీరు ఇచ్చట ఒక విషయము గుర్తుంచు కొనవలసియున్నది. ప్రపంచములో మనుష్యుడు తాను కూడబెట్టుకొనిన పదార్థ ములను మృత్యువు వారి నుండి బలవంత ముగ విడదీయుచున్నది. మృత్యువు యొక్క క్రియాత్మక రూపమిదియే. ఈ విషయము మరికొంత స్పష్టమగుటకు ఒక ఉదాహరణ ఇవ్వబడుచున్నది.

జయచంద్రుడనబడే ఒక గృహస్థుడు ఉండేవాడు. అతడు ఆ గ్రామములోని పెద్ద భూస్వామి. ధనవంతుడు. అతనికి భార్య పుత్రులు కూడా ఉండిరి. ఈ విధముగా అతడు ధన-ధాన్య కుటుంబ పరివార సంప దలతో సుఖముగా

నుండెను. కొంతకాలము తర్వాత వయోవృద్ధుడై అవసాన కాలము సమీపించి మృత్యుశయ్యపై పడియుండెను. అతడు ఈ ప్రపంచము నుండి వెళ్లిపోవుటకు సిద్ధముగా నున్నాడు. ఇప్పుడు చెవ్పండి; జయం చంద్రుడు తాను వెళ్లిపోవుచున్నప్పుడు తన వెంట ఏమేమి తీసికొని వెళ్లగలడు ? జయ చంద్రుడు తనవెఌట ఈ ప్రపంచ పదార్థాము లను దేనిని తీసికొని వెళ్లదని మీ సమాధా నము. అయితే అతడు తన జీవిత కాలములో చేసిన పుణ్య-పాపముల క్రియా కలాపముల సంచితమును మాత్రమే తనవెంట తీసికొని వెళ్లగలడని పెద్దలు తమ అభిప్రాయ ములను చెప్పిరి. జయచంద్రుడు తాను సంపాదించిన సంపత్తిని స్వయముగా స్వేచ్ఛగా ఇచ్చుట వదలి వెళ్లుచున్నాడా ? లేక ఇంకేదైనా బలమైన కారణమున్నదా ? యెవరైనా తాను నంపా దించుకొనిన నంవత్తిని స్వేచ్ఛగా వదిలిపెట్టి వెళ్లలేరు. అందుకు బలమైన కారణమేదైనా ఉండవచ్చును. ఆ బలమైన కారణమే మృత్యు వు. అదది తప్ప ఇచ్చుట మరొక కారణము ఏదియు ప్రతీత మగుటలేదు. తాత్పర్యమేమ నగా మానవులు తమ జీవిత కాలములో సంపాదించుకొనిన వస్తువులను, ధనసంపత్తి న్తటిని మృత్యువు వారి నుండి బలవంత ముగా విడిపించి వేయుచున్నది. మృత్యువు యొుక్క న్వరూవమిదియే ! మృత్యుశయ్యపై పడియున్న జయచంద్రుడు తాను నంపాదిం చిన ధన నంవత్తినంతయు ప్రయోగాత్మకము గానే తనకు లభించినదే సత్యమును గ్రహిం చినట్లయితే, అతనికి ఎలాంటి దుఃఖము, క్లేశము కలుగదు. కాని ఇది యంతయు నాదే యని భ్రమ, మమత, ఆశ కలిగినపుడు మృత్యువు అతని నుండి ఆ సంపత్తిని బలవం తముగా విడిపించును. అట్లు బలవంతముగా విడిపోవుచున్నప్పుడు మానసిక క్షోభ, క్లేశము, దుఃఖము కలుగును.

చూడండి ! ఒక ఉపాధ్యాయుడు తన తరగతి గదిలోనికి వెళ్లి, అచ్చటి పుస్తకములను బ్లాక్‌బోర్డును, చాక్‌పీసులను, పెన్ను, పెన్సి ల్లను స్వేచ్ఛగా అవసరానుగుణ్యముగా ఉవ యోగించుకొనును. అతని పనివేళ ముగిసిన వెంటనే గంట మ్రోగును. ఉపాధ్యాయుడు తను ఉపయోగించుకొనిన వస్తువులన్నింటిని అచ్చటనే వదలి సంతోషముగా తరగతి గదిలో నుండి బయటకు వచ్చును. అతనికి తెలుసు-తాను ఉపయోగించుకొనిన వస్తు వులు తనవి కావని. అవి ఉపయోగార్థమే తనకు ఇవ్వబడినవని. వాటిపై మమత, ఆశ లేకుండా సంతోషముగా బయటికి వచ్చును.

ఈ విధముగ స్పష్టమగుచున్నదేమనగా మృత్యువు స్వయమేవ దుఃఖ ప్రదము కాదు. కాని మనుష్యుడు ప్రపంచ పదార్థముల యందు మమకారము పెంచుకొని నమయ మందు దుఃఖమును అనుభవించుచున్నాడు. ఈ విషయము మరికొంత స్పష్టముగ తెలిసి కొనుట కొరకు మరొక ఉదాహరణ గమనిం చండి !

ఒక ప్రదర్శన శాలలో రకరకముల చూపు అద్దములు ప్రదర్శింప బడుచున్నవి. అందులో ఒకటి తన ముఖమును చూచుకొని నవ్వుకొనే విధముగా వికృత రూపము దర్శించబడుచు న్నది. దానిలో తన నిజస్వరూపమునకు భిన్న మైన వికృత రూపమును చూచి మనము నవ్వుకొందుము. కొన్ని మంచి అద్దములలో ముఖము వికృతముగా దర్శింపబడినది. అది అద్దము యొుక్క దోషమే కాని తన ముఖములో దోషమేమీ లేదను విషయము నీకు స్పష్ట ముగా తెలిసియే యుండును. అదే విధముగ మృత్యువును మనము మమతా, మరియు నికృష్ట స్వార్థబుద్ధి అద్దములో నుండి చూచిన పుదు దాని ప్రతిబింబము మనకు భయం కరముగా మరియు భయము గొలుపు విధ ముగా గోచరమగుచుండును. అనగా దోషము మృత్యువు యందు లేదు. అది తన స్వార్థ మమతాబుద్ధి యందున్నది.

మరొక ఉదాహరణ గమనించండి;

ఈ సత్సంగములో ఉపస్థితులైన సజ్జను లలో రామదత్తు నామము గల ఒక వ్యక్తిని స్తసంగ కార్యనిర్వహణ అధికారి ఒక ముఖ్య మైన కార్యార్థము అతనిని బయటికి వంపెను రామదత్తునకు ఇచ్చటి నుండి వెళ్లుటకు ఇష్టము లేకున్నను, అధికారి ఆదేశముతో బాధపడుచు బయటకు వెళ్లిపోయెను.

ఇప్పుడు మీరు చెప్పండి; రామదత్తుని అభీ ష్టమునకు విరుద్ధముగా, బలవంతముగా అత నిని సత్సంగము నుండి బయటకు పంపుట వలన అతనికి దుఃఖము కలిగినది. ఇది సత్యమే కదా ! మీరు మరొకమాట ఆలో చించి చెప్పండి; రామదత్తుదు తనకు తాను ఇన ఇష్టానుసారము యెవరి బలవంతము లేకుండా సత్సంగము నుండి వెళ్లిపోయిన యెడల అతనికి దుఃఖము కలుగ గలదా ? కలుగనేరదని తెలియుచున్నది

సజ్జనులారా ! ఇప్పుడు మనము విచారిం చవలసిన ముఖ్య విషయ మేమనగా, రామ దత్తుడు రెండు పరిస్థితులలో సత్సంగము నుండి బయటికి వెళ్లవలసియే యున్నది. కాని అతడు స్వయముగా తనకు తాను తన ఇష్టాను సారము తస్సంగము నుండి బయటికి వెళ్లి నచో అతనికి దుఃఖము కలుగదు. అందుకు విరుద్ధముగా మరొకరు బలవంతముగా సత్సం గము నుండి వంపి వేసినవుడు అతనికి దుఃఖము కలుగును. అదే విధముగ మనుష్యు నకు మృత్యు సమయములో కలుగు దుఃఖ మునకు కారణము మృత్యువు కాదు. అతడు స్వయముగ ప్రపంచమును విడిచిపెట్టుటకు ఇష్టపడకుండుట కారణమగుచున్నది. ఈ ప్రపంచమును విడిచి పెట్టకుండ ఉండే కోరిక మనుష్యులలో ఎట్లు ఉత్పన్న మగుచున్నది ? దీనికి కారణము ప్రపంచ పదార్థముల యెడ మిక్కిలి మమకారము. ఈ మమకారము అజ్ఞా నము వలన కలుగుచ్నుది. ఈ ప్రపంచము నందలి భూమి, ధనము, సంపత్తి, పుత్ర పౌత్రాదులెల్లరు తనవారు. వారి కొరకు నేను ఇంకా బ్రతికి ఉండవలెననే భావన దృఢముగ కలిగియున్న కారణము చేత అతనికి మృత్యు సమయములో ప్రపంచమును విడిచి పెట్టకూ డదను కోరిక బలముగా ఉత్పన్నమగుచున్నది. ఇది యెంతటి విచిత్రమైన అజ్ఞానము ! ఏ వస్తువు తనది కాదో, ఏదికేవలము ప్రయోగా ర్థము కొరకే లభించినదో, దానిని తనదని భావించుకొనుట అజ్ఞానము. ఈ శరీరము మరియు దీనికి సంబంధించిన భౌతిక పదా ర్థములు నావని తలచుకొనుచున్నాము. మన లోని ఆత్మరూప-అవినాశి ఆత్మతో మనకు పరిచయమే లేకుండా పోయినది. భస్మము కాగల ఈ పార్థివశరీరము, మట్టితో తయారైన ఈ భౌతిక కాయముతో మనకు మిథ్యామో హము కలుగుచున్నది. కాని (అనిల) అపా ర్థివ (అమృత) అవినాశి (వాయు) ఆత్మతో మనకు ప్రేమ లేదు. యెోగీశ్వరుడైన శ్రీకృష్ణ భగవానుడు, కురుక్షేత్ర రణభూమిలో సంకట సమయమున అర్జునిని అజ్ఞానమును దూర మొనర్చుకొరకు ఈ విధముగ ఉపదేశించెను.

న జాయతె మ్రియతే వా కదా చిన్నాయం
భూత్వా భవితావాన భూయః అజో నిత్య
శ్శాశ్వతోఽ యం పురాణోనహన్యతె హన్య మానె
శరిరె ॥ -భగవద్గీత 2-20

హే ! అర్జునా ! ఈ ఆత్మ జన్మించదు, మరణించదు. ఇది ఒకప్పుడు లేకుండా పోదు. లేకుండా లేదు. ఈ ఆత్మ అజ-నిత్య-శాశ్విత మరియు సనాతనైనది. ఈ భౌతిక శరీరమును మాత్రమే మృత్యువు హరించును. (ఆత్మతో విముక్తమగును) "మత్యు" సంజ్ఞ పొందును. ఏ విధముగానైతే శరీరమందు బాల్యావస్థ, యౌవనావస్థ, వృద్ధావస్థ, క్రమముగా ప్రాప్తిం చుచున్నవో, అదే విధముగ మృత్యువు తర్వాత ఆత్మకు రెండవ శరీరము ప్రాప్తించును. జ్ఞాన పురుషులు మృత్యువు వలన కలుగు శరీర పరివర్తనకు భయపడరు. హే అర్జునా !

"అంతవన్త ఇమేదేహా నిత్యస్యోక్తశ్శరీరిణః"
-భగవద్గీత 2-18

ఈ నిత్య ఆత్మ యొుక్క "శరీరము" నశించును. కాని ఈ "ఆత్మ" నశించదు. మర ణించదు. మరణింపబడదు.

"నైనం చిన్దన్నిత శస్త్రాణి నైనం దమతి పావకః । న చైనం క్లేదయాన్త్యాపోన శోషయతి మారుతః ॥
-భగవద్గీత 2-23

ఆత్మను శస్త్రములు ఖండింపలేవు, అగ్ని కాల్చలేదు. జలము నానబెట్టలేదు, వాయువు శుష్కింపజేయలేదు.

ఈ విధముగ స్పష్టమగుచున్నదేమనగా మనము శరీరము కాదు. మృత్యువు శరీరము నకు కలుగుతుంది. ఆత్మకు కాదు.

ఋషి దయానందుడు సత్యము మరియు నిత్యమైన శివుని అన్వేషణలో మృత్యువు యొుక్క రహస్యమును తెలుసుకొనుట కొరకు ఇంటి నుండి వెడలెను. ఉత్తర భారతదేశములోని హిమాలయ పర్వ ప్రాంతమందలి సమస్త సాధు సంతులను దర్శించి, చివరగా స్వామీ దండీ విరజానంద సరస్వతి మథుర గారి వద్ద వేదవిద్యా జ్ఞానతత్వ ప్రకాశము గ్రహించెను. గురువు గారి ఆజ్ఞతో, వేద విరుద్ధ మత సాంప్రదాయ కురీతులను ఖండించుచు వలు చోట్ల శాస్త్రార్థములను చేసెను. అతని అమర గ్రంథము సత్యార్థ ప్రకాశము. అయితే అతనికి విరుద్ధముగా కొన్ని మత సాంప్రదాయ శక్తులు కుట్రపన్ని అతనికి 18 మారులు విశమిచ్చి చంపుటకు ప్రయత్నించిరి. వారి చివరి ప్రయో గము వలన అతని శరీరము అస్వస్థమై మృత్యువును ఆహ్వానించినది. ఈ అంతిమ వేళలో కూడా అతడు చిరువనవ్వుతో ఈశ్వర సంకల్పమును ఆహ్వానించెను. విష ప్రభావ ముతో శరీరము ఛిద్రమై విషము గ్రక్కుచుం డెను. అట్టి స్థితిలో కూడా అతడు శారీరిక బాధను లెక్క చేయలేదు.

"హే దయామయ ప్రభూ ఈశ్వరా ! నీ సంకల్పము నెరవేరు గాక ! నీ లీల మంచిదే" యని ఈశ్వరుని ప్రార్థించుచు తన పార్థివ శరీరమును స్వేచ్ఛగ మృత్యువునకర్పించెను. దయానందుడు మృత్యువునకు భయపడలేదు. మరణము శరీరమునకు కలుగుతుంది. ఆత్మకు కాదను తత్వజ్ఞానము తెలిసిన వాడు కావున అతడు నిర్భయముగ నవ్వుచు తన పార్థివ శరీరమును మృత్యువునకర్పించెను. ఆత్మ ప్రభు ఆజ్ఞతో మరొక చోటికి వెళ్లును.

సజ్జనులారా ! నేటి సత్సంగములో మనము వేదమాత సందేశము**"వాయు తనిల మమృతం మథే దరి భస్మాంతం శరీరం"** అను మంత్రముపై విశేషముగా విచారించుకొని నాము. శరీరము మరియు ఆత్మ యొుక్క సంయోగమే జీవనము. ఇందు శరీరము మరణ ధర్మము గలది. క్షణభంగురము మరియు అనిత్యమైనది. కాని ఆత్మ అజ రము-అమరము-అభౌతికము మరియు శాశ్విత సత్తా కలిగినది. ఇచ్చట మనము ఒక ముఖ్యమైన విషయమును గుర్తుంచుకొనవలసి యున్నది. శరీరము చివరగా భస్మము కాగలదు. ఇది మరణ ధర్మమైనది. అంత మాత్రమున ఇది త్యాజ్యము కాదు. విడువదగి నది, నిరర్థకమైనది ఎంత మాత్రము కాదు. ఎందుకనగా ఇది ఆత్మ యొుక్క దివ్యరథము. జీవనయాన దైవీనౌక, ఇది ప్రియమైన పరమాత్మను దర్శింపజేయు మందిరము. దీని ఆధారము మరియు సాధనములతో జీవాత్మ (క్లిబెన్మర) తన ఆత్మశక్తితో (కృతం స్మర) ఆత్మ నిరీక్షణ పూరకముగా అనాసక్త భావముతో నిరంతరము సత్కర్మ (యజ్ఞకర్మ) సాధనలతో ఈ చరమ సాధ్య "ఓమ్" ప్రభువును పొంద గలదు. ఈ విధముగా జీవాత్మ ధన్యము, సఫలము మరియు కీర్తిదాయకమగుచు అమరత్వము పొంది మృత్యుంజయీ కాగ లదు. ఇది యంతయు ఎట్లు సంభవమ గునో ముందు కథాక్రమములో మంత్ర ప్రకాశ ములో విచారించి తెలుసు కొనగలము.

आर्य समाज गुंजोटी

के कार्यकर्ताओं को संबोधित करने के बाद सभा प्रधान श्री विट्ठल राव जी का सम्मान करते हुए साथ में पं. प्रियदत्त शास्त्री, अंतरंग सदस्य श्री मल्लिकार्जुन व श्री श्रीनिवास जी

आचार्य सुभाष जी द्वारा स्थापित गुरुकुल एडशी का दर्शन कर यज्ञ के बाद वहां के कार्यकर्त्ताओं से बातकर वहां की समस्याओं का समाधान करते हुए सभा प्रधान विट्ठल राव आर्य

यज्ञ और बैठक में श्री सदाविजय जी आर्य, श्री आर्य मुनिजी अध्यक्ष गुरुकुल एडशी, श्री वेदात्म वेश जी, श्री सम्यक् क्रांतिवेश जी, श्रीकांत रंजनकर जी, श्री सुभाष निंबाळकर आदि ने भाग लिया । गुरुकुल की देखरेख हेतु अध्यक्ष आर्य मुनिजी ने चार सदस्यीय समिति कि घोषणा की । इनमें श्री वेदात्म वेश जी, श्री सम्यक् क्रांतिवेश जी, श्रीकांत रंजनकर जी, श्री सुभाष निंबाळकर हैं ।

Date of Publication 2nd and 17th of every Month, Date of Posting 3rd and 18th of every Month
आर्य जीवन 03-12-2021 Registered-Reg. No. HD/783/2021-23 RNI No. 52990/93

ఆర్య జీవన్

హిందీ-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక
Editor : Sri Vithal Rao Arya, M.Sc., L.L.B., Sahityaratna.
Arya Pratinidhi Sabha A.P.-Telangana, Sultan Bazar, Hyderabad-500095.
Phone : 040-24753827, 24756983, Narendra Bhavan : 040 24760030
Annual Subscription Rs. 250/- సంపాదకులు : విఠల్ రావు ఆర్య, ప్రధాన సభ

To,

ఇందూర్ (ఓం గుట్ట)లో మహర్షి దయానంద యోగాశ్రమ ప్రారంభోత్సవ సందర్భమున ఆర్య ప్రతినిధి సభ అధ్యక్షులైన విఠల్ రావు ఆర్య గారికి సన్మానం చేస్తున్న నిర్వాహకులు ఆర్ష కవి పండిత్ ప్రణవ్ కుమార్ గారు, బచ్చు రాజ్‌ప్రకాష్ ఆర్య గారు ఆర్య సమాజ అధ్యక్షులు మంత్రివర్యులు మరియు తదితరులు

వేద సూక్తమనే గ్రంథమును ఆవిష్కరిస్తున్న సభాధ్యక్షులు విఠల్ రావు ఆర్య గారు

ప్రారంభోత్సవ సందర్భమున తీసిన ఊరేగింపులో పాల్గొన్న సభాధ్యక్షులు & ఆర్య సమాజ్ నాయకులు

THE VIEWS & THE NEWS PUBLISHED IN THIS ISSUE MAY NOT NECESSARILY BE AGREEABLE TO THE EDITOR.
Editor : Sri Vithal Rao Arya E-mail : acharyavithal@gmail.com, Mobile : 09849560691.

సంపాదకులు : శ్రీ విఠల్ రావు ఆర్య, ప్రధాన సభ, ఆర్య ప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర.-తెలంగాణ, సుల్తాన్ బజార్, హైదరాబాద్-95. Ph : 040-24753827, E-mail : acharyavithal@gmail.com
संपादक : श्री विट्ठल राव आर्य, प्रधान सभा ने सभा की ओर से आकृति प्रिन्टर्स, चिक्कड़पल्ली में मुद्रित करवा कर प्रकाशित किया ।
प्रकाशक : आर्य प्रतिनिधि सभा, आं.प्र.- तेलंगाना, सुल्तान बाज़ार, हैदराबाद-500 095. Narendra Bhavan Ph : 040 24760030